

॥ ग्रथ श्रीजानकी शतनाम स्तोहाम् ॥

श्रीव्रह्मोवाच-

शृगु नारद वच्यामि सीतायाः परमं शुभन् । नाम्नामष्टीत्तरशतं शतकोटिफलप्रदम् ॥१॥ इत्युक्तः परेशंतः शैलश्चैव चिदात्मिका । प्रतीतानन्द भेदेन सीतेति परमं पदम् ॥२॥ अस्य श्रीतीतानामाष्टीत्तर शतकस्य ब्रह्मात्रृषिः श्रनुष्टुप् छन्दः । श्रीसीता

देवता । श्रीसीताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

अथध्यानम्---

नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्बरालकृतां गौराङ्गींशरदिनदसुन्दरसुखीं सस्मेरविम्बाधराम् । कारुगयामृतवर्षिणीं हरिहरत्रह्मादिभिर्वन्दितां ध्यायेद्धक्तजनेप्सितार्थफलदां रामप्रियां जानकीम् ॥ 🍜 सीतारामत्रिया—रामवल्लभा—हरिवल्लभा । मैथिली—मिथिलाधीशतनया—काश्यपी सुता ॥ वैदेही-विदेहसुता-विदेहकुलनन्दिनी । जगतां जननी चैव जानकी जनकात्मजा ॥५॥ कौशलेन्द्रप्रियतमा कौशल्याप्राणवल्लभा । अयोध्यानन्दजननी अयोध्यानित्य वासिनी ॥६॥ सुलच्या लच्चादा लच्मगप्रतिपूजिता । श्वश्रृशुश्रुपण्परा शूश्रूपा-सुखवल्लभा ॥७॥ पतित्रियकरी देवीं देवरप्रण्यात्मिका । सतीनामप्रणी साध्वी सती सर्वाङ्ग सुन्दरी ॥=॥ जगत्यवित्री सावित्री नन्दमानन्दकारिणी । गौरी संसारिणी शक्तिः शिवरूपा शिवप्रिया ॥६॥ शची स्वाहा संयमिनी तामसी चैव भागवी। सदा गीतिश्र समतामीश्वरी चैव रोहिस्ती ॥१०॥ माया-छाया-सदाछाया सवर्णां वस्वर्तिनी । त्रह्मविद्या च गायत्री संध्या च प्रण्वात्मिका ॥ भृर्भु वःस्वः स्वरूपा च सत्यादि त्रिगुणात्मिका। तत्सवितुर्भर्गरूपा भववुद्धिप्रचोदिका ॥ मात्सी-कौर्मी-च वाराही-नारसिंही च वामिनी । चत्रान्तकमयी चेत्रसाचिग्णी पर्वरूपिग्री ॥ रावणान्तकरी रामा हृदयान्तर्विलासिनी । रेवती ध्यानरूपा च वरकली सा च रुक्मिग्।। कालिका कालशक्तिश्र-कालास्याकालरित्ताणी । श्रात्माद्या पौर्णमानी च सात्वती सूर्यसंगतिः ॥ प्रहशक्तिर्देवशक्तिः सुखदुःखप्रदायिती । चतुर्वर्गकलाधीशा चतुर्वर्गकलात्मिका ॥ चिन्छिकिर्प्रहिर्विनित्या पट्चक्री चक्रधारिग्णी। मुलाधाराधिशयनी पिङ्गलाद्याविलिभ्बती॥ गब्दरूपा-गब्द्यानिर्वग्टानाद्स्वरूपिग्री । यौगिनी योगरूपा च सिद्धिः-सिद्धिः फलप्रदा ॥ षृद्धिर्द्धित्रदा नित्या गोचरा गोचरात्मिका । नयज्ञादिर्द्धित्रयज्ञा तीर्थन्यहर्भत्वप्रदा सववेदात्मिका—सर्वयेदार्था—सर्वसंधिका । जीवयोगिजीवभाता जीवकैवन्यदाविकी जीवानां जीवनं जीव परमात्मा सनातनीं । इत्येतज्ञानकी देन्याः नाम्नामधील्ला भवष् किथितं तव देवर्षे भगवान्भागवतोत्तम । यः पंठत्प्रयतोनित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः । परं पदमवाप्नोति भ्रक्तिम्रक्तिश्चविन्दति ॥२२॥

॥ इति श्रीजहायामले तन्त्रे ब्रह्मा नार्य संवाध श्रीजानकी श्रष्टीचर गतनाम स्तीत्र ॥ सम्पूर्णम् ॥

क्ष श्रीजनकात्मजाये नमः क्ष

॥ श्रीजानकी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

श्रीब्रह्माजी ने कहा-

हे नारद ! अब मैं श्रीसीताजी के परम शुम अष्टोत्तर शतनाम का वर्षान करता हूँ जो शतकोटि मन्त्र जप के समान फल देने वाला है ॥ १ ॥ इस प्रकार कह कर ब्रह्माओं १ चिदात्मिका श्रीजी का परमपद अद्भुत आनन्द देनेवाला 'सीता' ऐसा सुन्दर नाम उच्चारण किया ॥ २ ॥

श्रीजानकी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र के बद्याऋषि हैं, अनुब्दुप छन्द हैं, श्रीजानकी देवता है, श्री सीताराम जी की प्रसन्नता के लिये इसके पाठ का विनियोग है। अब व्यान वर्णन

नीलकमलदल नयनी सुन्दर, साड़ी नीली शुभ पहनी है।
गोरी-शरद् चन्द्रमा जैसी, मुखबाली सुख सहनी है।।
लाल ओठ बिम्बाफल जैसे, करुणामृत रस वरसाती।
हरि-हर-ब्रह्मादिक देवों से, वन्दित सब गुण सरसाती।
ध्याता जन के सुफल मनोरथ, रामवल्लभा करती है।
परमपूज्य श्रीजनकललीजू प्रेमनिधी उर भरती है।। ३ ॥

ॐ सीता-रामित्रया-रामवल्लभा-हरिवल्लभ-मैथिली-मिथिलाधीश तनया-कात्यनी सुति विदेशस्ता-विदेशकुल निव्नि-जगजननी जानवी-जनकात्मजा ॥ ४-४ ॥ कौशहेर प्रियतमा, कौशल्या प्राणवल्लभा-श्रयोध्या में थानन्द उत्पन्न करने वार्ल -अयोध्या में वित्र निवास करनेवाली-सुलच्णा-सुलच्ण प्रदान करनेवाली-लच्मणजी द्वारा प्रवृत्तित-सासकी देव में परायणा-सेवा के सुख को प्रिय माननेवाली-पित का प्रिय करनेवाली देवी-देवर के देमचे आदर करनेवाली-सितियों में शिरोमिण-साध्यी सती-सर्वाञ्च सुन्दरी-जगत् की ब्रह्माणी-सिवित्री

To keep

बातन्द को भी आनन्दित करनेवाली-गौरी-संसार की महाशक्ति-कल्याण स्वरूपा-शिवप्रिया-श्वी-स्वाहा-संयिमनी-तामसी-भागवी-सदैव गाने लायक-समता की ईश्वरी-रोहिगी।। १०॥ माया-छाया-सदैव कृपारूपी छाया करनेवाली, सुवर्ण के समान श्रेष्ठवर्णवाली-ब्रह्मविद्या-गायत्री संध्या-प्रगावातिमका ॥ ११ ॥ भूभुवः स्वः स्वरूपा-सत्वादि त्रिगुणातिमका-तत्सवितुर्भगं रूपा-भरवुढि की प्रेरणा करनेवाली ॥ १२ N मात्सी-कौमीं-बाराही-नारसिंही-वामिनी-चत्रियान्त कारिगी-चेत्र की साद्यिगी-पर्व स्वरूपिगी ।। १३ ॥ रावग का अन्त करनेवाली-श्रीराम के हृदय में सदा विलास करनेवाली-रेवती-ध्यानरूपा-वल्लबी-रुक्मिग्री ॥ १४ ॥ कालिका-काल शक्ति-काल के मुखरूपी-काल की रत्ता करनेवाली-आत्मा-श्राद्या-पौर्णमासी-सात्वती-सूर्यं की संगति ॥ १५ ॥ प्रहशक्ति-देवशक्ति-कर्मानुसार सुख दुःख प्रदान करनेवाली-चतुवर्गं तथा कलाओं की ईश्वरी-चतुवर्गं तथा कला स्वरूपिग्गी ॥ १६ ॥ विच्छक्ति-नित्याप्रकृति-षट्चक्री नक्षारिगी-मूलाधार चक्र में शयन करनेवाली (कुगडिलिनी) पिङ्गलवरगी-विलिम्बनी-शब्द ह्या-शब्द योनि-घण्टानाद स्वरूपिणी, योगिनी-योगरूपा-सिद्धि-सिद्धिफल प्रदान करनेवाली ท १७-१८ ท वृद्धि-वृद्धिप्रदायिका-नित्य अगोचरा-गोचरात्मिका-नीति जानने वालों में सर्व प्रथम-यज्ञरूपा-तीर्थं ट्यूह का फल देनेवाली । १९ ॥ सर्व वेदात्मिका-सर्ववेदार्था-सबका संप्रह करनेवाली-जीव योनि-जीवमाता, जीवों को कैवल्यपद प्रदान करनेवाली ॥ १९ ॥ जीवों का जीवन-जीवों की परमातमा-सनातनी=

श्रीजानकीदेवी के ये ग्रष्टोत्तर शतनाम हे नारद! आप भागवतों में सर्वोत्तम हो इस लिये कहे हैं ॥ इसका त्रिकाल संध्या वन्दन के समय जो कोई श्रद्धापूर्वक पाठ करता है वह सिक-मुक्ति तथा परमपद प्राप्त करता है ॥ २२ ॥

"यह ब्रह्मा नार्द संवादात्मक ब्रह्मयामलतन्त्र का श्रीजानकी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"



५६६ श्रीजानकी-कुलदेवतम् र्र्ह्र अ

भाष्राज्यमर्पंयति भक्ति लवेप्यदग्रं प्रेम्गि प्रदर्शयति पाद सरोज शोभाम् । विद्नान्निवारयति या भजतां समन्तात् सा जानकी विजयते कुलदेवतंनः ॥

—श्रीहर्याचार्यं स्वामिनः

श्रीसीता—स्वस्त्यष्टकम्

औराघवेन्द्रदयिते वसुधासुताये चान्तिप्रसिद्धग्रुवनत्रयकीर्त्तिकार्ये । लोकत्रयानुषम रूपगुणाभिरामे स्वस्त्यस्तु ते सुनयनाङ्कविभूषणार्ये ॥१॥

धर्मावनाय परित्यक्तसमस्तसीरूये भतु र्यशोवितनये कृतसर्वकृत्ये। सर्वासुभुद्भरगापोपगारचागाय स्वस्त्यस्तु ते सततमेव सुजागरूके ॥२॥

सच्चित्सुखैककमनीयसुविष्रहायै शोभानिषे सकलशक्तिधरप्रियायै । भात्मस्थिते तु सचराचरदेहभाजां स्वस्त्यस्तु ते सकलभूतहितावतारे ॥३॥

हेमालये सहचरीरनुरञ्जयन्त्ये जीलाभिरेत्र विविधाभिरनुत्तमाभिः। प्रागाप्रियेगा सुपमानिधिना समं वै स्वस्त्यस्तु ते श्रवगामङ्गलकीर्चनायै ॥शा

श्रीचन्द्रभानुतनयारिपुजित्सुताभ्यां श्रीलद्दमणाधरिणमङ्गलपुत्रिकाभ्याम् । पार्श्वद्वयेन लसिते धृतचामराभ्यां स्वस्त्यस्तुते हि शरगांशरगाोजिमतानाम् ॥५॥

> हेमांरितापन बुता सुभगामि रित्यं श्रीमद्रलाकरस्तां सहितामिरेव । संसेविते विविधराजवरोपचारैः स्वस्त्यत् सर्वघटनाघटनचमायै ॥६॥

भाराध्यमानचरगो विधिशङ्कराध्ये देवे विवेकिभिरनुत्तमभाग्यवद्भिः। श्रीवागुमाप्रभृतिशक्तिसमर्च्यमागो स्वस्त्यतुते जनकनन्दिनि रामजाये ॥७॥

हितेऽनुपमसिद्धिद्धामलीला नामस्यरूपवति मङ्गलचिन्तनायै। शं तेऽस्तु शीलनिधये शुभमम्युजाच्ये स्वस्त्यस्तु ते पतितपावनिसाश्रिताये ॥नी स्वस्त्यष्टकमिदं स्तोत्रं पावनं पापनाशनम् ।

पठतां प्रत्यहं भ्यात् सर्वमङ्गलकारकम् ॥॥ इति अनन्त श्रीविभृषित पूज्यपार प्रातः समरणीय श्रीस्वामी श्रीरामपदार्थदासजी महारात्र (श्रीवेशान्तीजी) विरचित श्रीसीता स्वस्त्यष्टक स्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीसीता स्वस्त्यष्टकम्

श्रीराघवेन्द्र प्रमुकी प्राण्यवलामा वसुधानन्दिनी-जिनकी समा शीलता कीर्ति त्रिभुवन प्रसिद्ध है, जिनके अनुपम रूप लावण्य तथा गुण लोकत्रय विरुक्षण है, ऐसी श्रीमुनवना के गोद को सुणोनित कर नेवाली है श्रीकशोदीज़ ! आपका सरैव रवरित (कस्याण में मा

॥ १ N धर्म की रत्ता करने के लिये जिन्होंने सम्पूर्ण सुखों का त्यागकर दिया है तथा अपने ॥ भत्ति के यश्रो विस्तार के लिये असहा कष्ट सहन किये हैं तथा जो सभी प्राण्यारियों के भरण-पोषण संरत्तण करने में इत्तचित्त हैं ऐसी इमारी स्वामिनी जू! आपका सदेव स्वस्ति सुमङ्गल हो ॥ २ ॥ सिच्चिदानन्द दिव्य सुख तथा दिव्यमङ्गलमय विग्रश्चारण करनेवाली, शोभा मुन्दरता की समुद्र, सकलशक्तियों की धारण करनेवाले प्रभुकी प्राणिप्रया, सचराचर देहभारियों की प्राणास्मा, तथा सभी जीवात्मात्रों के दित के लिये अवतार धारण करनेवाली हे श्रीजानकीजी ! श्रापके लिये सदैव स्वस्ति हो ॥३॥ श्रीकनकभवन में निरन्तर मनोरञ्जन करानेवाली अपनी सहचरियों के साथ सुप्रसन्न रहनेवाली, अनेकानेक दिव्य लीलाओं का सर्वश्रेष्ठ मुखानुभव करनेवाली, सुपमाशील निधान अपने प्राण प्रियतम के सङ्ग सदा आनन्द में रहने वाली है श्रीकिशोरीजी ! आपका स्वस्ति हो, कल्याण हो ॥ ४ ॥ श्रीचन्द्रभानु दुमारी सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजू (१) श्रीरिपुजित् कुमारी श्रीचारुणीवाजी, (२) श्रीलच्मणाजी, (३) तथा श्रीघरणी मङ्गलतनया श्रीवरारोहाजी (४) जिनके दोनों श्रोर चँवर लेकर सेवा परायणा खर्ड़ी हैं, ऐसी हं भीमैथिलीजू ! आपका सदैव स्वस्ति हो सुमङ्गल हो ॥ ५ ॥ श्रीहेमाजी (५) श्रीशत्रुतापनजी की कम्या श्रीचेमाजी (६) श्रीसुभगाजी (७) तथा श्रीवलाकर कन्या श्रीपद्मगन्धाजी (८ सहित सभी सखी सहेलियाँ जिनकी सेवा में परायण हैं ऐसी हे श्रीविदेहनन्दिनीजू! आपका सदेव स्वस्ति हो कल्याण हो ॥ ६ ॥ जिनके चर्णों की आराधना ब्रह्मा-विष्णु-शङ्करादिक देवाधिदेव करते हैं, सर्वोत्तम भाग्यणाली विवेकी सन्तजनों तथा श्रीसद्मी-श्रीपार्वती-श्रीसर्म्वती आदि उचकोटि की शक्तियाँ जिनकी निरन्तर सेवा करतीं हैं ऐसी हे श्रीरामवल्लभे ! हे श्रीजनक-निन्दिनी ! आपका सदा कल्याण हो स्वस्ति हो ॥ ७ ॥ जिनका नाम-रूप-धाम-लीला तथा मङ्गलमय चिन्तवन अनुपम सिद्धि प्रदान करते हैं ऐसी हे श्रीजू! आपका भद्र (कल्याण) हो, है शील निधान ! हे कमलनयने ! आपका परम शुभ हो । हे पतित पावनि ! हे आश्रितों की रचा जरनेवाली आपका स्वस्ति हो ॥८॥ पर्म पावन पापनाशक इस 'श्रीसीता स्वस्त्यष्टक" को जो प्रतिदिन पाठ करे उसको नित्य ही निरन्तर सभी प्रकार का सुमङ्गल होता है ॥ ७ ॥

"यह परमपूज्य प्रातः स्मराणीय अनन्त श्रीविश्वषित स्वामी श्रीरामपदार्थदासजी महाराज (श्रीवेदान्तीजी) प्राणीत श्रीसीता स्वस्त्यष्टक सम्पूर्ण हुआ।।"



॥ श्रीसीताजी का ग्राचिन्त्य वैभव॥

[श्रीमद वालमीकीय रामायणान्तर्गत]

इदं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्रिरतं महत्

तां दृष्टवा मुनयः सर्वे जनकस्यपुरी शुभाम् । साधु साध्विति शंसंती मिथिलां समपूज्यत् ॥ 883

अचिन्त्यान्यप्रमेयाणि अकुलानि नरपुङ्गवः! इच्याक्रणां विदेहानां नेषातुल्योऽस्ति कश्चन ॥ सदशो धर्म सम्बन्धः सदशो रूप सम्पदा ॥

इयं सीता ममसुता सहधूर्मचरी , तव । त्रतीच्छ चैनां सद्भं ते पाणि गृह्मीव्यपाणिना ।।

1 47F 88 15 15 ः गुणाद्रूपगुणाच्चापि । प्रीतिभूयोङभिवर्धते । तस्याश्च भर्ता द्विगुगां हृदये परिवर्तते

मगवान वात्मीकि कहते हैं—यह सम्पूर्ण रामायण श्रीसीताजी का ही महान चिट्ट है, रामायण का अर्थ ही होता है "रामायाः सीताया अयनं रामायणम्" इसमें से श्रीसीता चित्र पृथक् कर दिया जाय तो रामायण में तत्व ही क्या रह जाता है ? श्रीविश्वामित्र मही मुनि के साथ श्रीराम लद्म्या के सहित, सभी मुनियों ने श्रीजनकपुरी का देशन किया, श्री जानकीजी की इस परम शुभ नगरी को देखकर सभी ने बहुत सुन्दर-बहुत सुन्दर कह कर प्रशंसा करते हुए श्रीमिथिलाजी का भलीभाँति पूजन किया। हे राजराजेन्द्र ! इच्चाइश्रों ही श्रीर विदेहों दोनों के कुलअचिन्त्य श्रीर अप्रमेच (निस्मीम) प्रभाववाले हैं, इनके समान कोई ही नहीं। इमारा और आपका धर्म-रूप तथा सम्पदा सभी दृष्टियों से सदृश सम्बन्ध है। श्रीजनका ने श्रीरामजी से कहा 'यह मेरी कन्या सीता आपकी धर्मसहचरी हो।

1.

आप इतकी शुभेच्छा करें तथा अपने करकमल से इनका पाणिमहण करें, आपका कल्याम हो। भीकिशोरीजी के सम्बन्ध से अवेश्वर प्रभु का भी लोक लीला में परम शुभ कल्याग होता है यह भाव इससे प्रकट होतां है। विवाह के परचात् श्रीजूके रमगीय मनोहर सद्गुगों से तथा ह्व सौन्दर्भ से श्रीरामणी का श्रीसीताजी के प्रति उत्तरोत्तर प्रीतिभाव निरन्तर बढ़ता जाता है तथा अपने प्रियतम के प्रति श्रीकिशोरीजू का प्रेम उनसे भी द्विगुगा (दूना) उत्त-होतर हृदय में बढ़ रहा है। भाव यह कि श्रीयुगल प्रभुका दिव्य प्रेम पूर्णतः प्रतिविना विक-सित हो रहा है।

यत् यत् फलं प्राथयसे पुष्पं वा जनकात्मजा। ... तत्-तत् .. प्रयच्छ. वैदेहा। यत्रास्या एमते मनः ॥ हा । हा

्दर्शनं चित्रक्रदस्य मन्दार्किन्याश्च शोभने । श्रिधकं पुरवासाच्च मन्ये तव च दर्शनात् ॥

के पार्ट के पार्ट का एड ्रहे लदम्या ! श्रीजानकीजी जिस जिस फुल की तथा जिस जिस पुष्प की चाहना करें ्रहुम ब्रिहेह, राजकमारीं को वही लानिदिया हकरो, जिसमें उनका मन प्रसंघ रहे वही हमको करना बाहिये। यह भक्तों को धेवा की पद्धति प्रभु पढ़ा रहे हैं । भक्त को विही करना विहिये ृजिसमें श्रीज़्रुकी कृषा सानुकूलता इसहज ही प्राप्त होती पहे ।

श्रीरामजी श्रीकिशोरी जी से कहते हैं, हे शोभने ! यह श्रीनित्रकूट का तथा श्रीमन्दाकिनी का दर्शन हमको आपके सानिध्य से तथा शापके श्लीमुख के दर्शन से श्रीअवध्वास से भी अधिक ्धल प्रदान कुर रहा है। भाव यह है कि सर्वेष्वर को श्रीजू का साहचर्य अपने निजधाम से भी अधिक सुखप्रद प्रवीत होता है। यह है भीकिशोरी जी की सचिद्वानन्द सरसता।

्श्रियः श्रीश्रमृवेदम्या कींत्याः कीर्तिर्दामाः ज्ञमा ।

, - अयोध्या कागड ४४।१५

सौमित्रे ! अत्रतो गच्छ सीतात्वामनु गच्छनु । गुष्टतोऽहं गिरिष्यामि त्वां सीतां परि पालयन्।

त्रप्रमेयं हि तरोजः यस्य सा जनकात्मजा।

प्रिणिपात प्रसन्ता हि मैथिली जनकात्मजा। ैं। रहित अलुमेषा परित्रातुं। राचस्यो महत्तो भयात्।।

श्रह	श्व रघुवं	शश्च ह	तदमग्रश्व	महाबल	तः ।	वैदेह्याःद	र्शनादेव	धर्मतः	परिरक्तिताः	h
प्व	सर्वस्य	भृतस्ते	परिष्यङ्गो	मया	कृत:		•••		nj";"	1

--मुन्दर काएड

एवमुक्ता हनुमंता वैदेही जनकात्मजा । उवाच धर्मसहितं हन्मन्तं यशस्विनी । राज्यसंश्रयवश्यानां कुर्वन्तीनां पराज्ञया । विधेयानां च दासीनां कः कुप्येद् वानरोत्तम । पापानां वाऽशुभानां वा वधार्हाणां पलबङ्गम । कार्यं कारुएयमार्थेण न कश्चित्रापराध्यित

वसुधायाश्च वसुधा श्रियः श्रींमतृ वत्सतात् । ॥

—युद्धकाण्ड ११४। २२।

श्री जानकी जी श्रियों की भी श्री हैं, कीर्तियों की अप्रगण्या कीर्ति हैं तथा चमा के भी चमा हैं।

श्रीराम कहते हैं लदमण ! तुम आगे ग्रागे चलो, सीता तुम्हारे पीछे चलें, मैं तुम्हारी तथा सीता की रक्षा करता हुआ सबसे पीछे रहूंगा । अर्थात् हम दोनों भाई श्री सीता जी ही सुरक्षा में दत्तिचत्त रहें, यही कर्तंच्य हैं । इससे व्यक्त होता है कि भक्त श्रीर भगवान् दोनें श्री जूकी सेवा में साधधान रहते हैं।

मारीन ने रावण को समभाते हुए कहा—उनका तेज श्रप्रमेय है. निस्सीम है जिनकी आदि शिक्त श्री जनकात्मजा प्राण प्रिया हैं। यहां श्री जानकी जी के सम्बन्ध से प्रभु का परा किम श्रतुलनीय हो गया है, यह भाव व्यक्त होता है।

त्रिजटा कहतीं हैं—हे रात्तिसयों ! तुम जो महान् भय से बचना चाहती हो तो केवल प्रिणिपात प्रणाम करने मात्र से ही प्रसन्न हो जाने वाली श्री जनक राजकुमारी मैथिली जू हे शरणागत हो जाओ। इनको प्रसन्न करने के लिये प्रणाम कर लेना ही पर्याप्त है, ऐसी ये दणा हैं। लङ्का की निशाचिरयों को भी इनको इस श्रमीम दयालुता का ज्ञान था, इससे यह भाव विदित होता है। श्री जू की कृश श्रपरम्पार है।

श्री विदेह राजनित्ती क। दर्शन करने का महत्त्व प्रभु श्रीराम वर्णन करते हैं कि है हनुमान जी ! तुम श्री जनक कुमारी का दर्शन करके आये हो इस महान् कार्य से हमारी रघुवंश की तथा लदमण की तुमने रक्षा की है। इसके सहशा पारितोषिक रूप में देने के लिंबे हमारे पाम तो कुछ भी नहीं है, इपिलये हमारा सर्वस्व तो हमारा हृदय है। आश्री हम प्रेम निभंर होकर तुमको हृदय से आलि ज़न करें ! ऐसा कह कर आपने श्री हनुमान जी की हृद्य से लगाकर आलि ज़न किया। श्री सीता जी के दर्शन से पर ब्रह्म हृदय लगाकर मिलते हैं। इस से बदकर श्रीर क्या फल हो सकता है ?

श्रीराम विजय के पश्चात् श्री हनुमान जी श्रीजानकीजी को यह शानन्द पूर्ण समाचार सुनाने गये. तब उनकी प्रथम यात्रा के समय श्री सीता जी को कष्ट प्रदान करने वाली राश्च- सियों को कुछ दण्ड देने की इच्छा हुई उस समय श्री किशोरी जी बड़े धमें सङ्कट में पड़ गई परन्तु कहणामयी का द्रवित हृदय संकोच त्याग कर श्री हनुमान जी के प्रति पुकार उठा, शापने अत्यन्त दया भाव से कहा, उस समय का वर्णन महर्षि वाल्मीकि लिखते हैं कि—

1

श्री हनुमान जी के ऐसे वचन सुनकर यशस्विनी श्री जनक निन्दनी यैदेही जू ने धर्म पूर्ण श्री हनुमान जी के प्रति ऐसा बचन कहा कि-हे वानर श्रेष्ठ हनूमान ! जो राज्याथय के वशीभूत हैं, परवश हैं, आज़ा के पराधीन दासियां हैं, अनिच्छित कार्य करने के लिये विवश है, उनके ऊपर कोध कौन करेगा ? हे किपराज पवनकुमार ! श्रेष्ठ पुरुषों को पापात्माओं पर प्राण दग्ड देने योग्य दुरात्मायों पर भी करुणा ही करनी चाहिये। कोई किसी का अपरायी नहीं है। सब अपने कर्मों का ही फल भोग रहे हैं। कितनी अपार कुपा है, श्री किशोरी जू की जय हो, जय हो, जय जयकार हो । बिना प्रणाम के विना प्रार्थना के, विना शरणागित के विना अपराध चमा करने के लिये चरणों पर गिरने के ही केवल करुणा परवश हृदय से अकारण करुणा तो आपकी ही है। यह तो उपमा रहित दीन हीनों पर अविन्त्य बात्सल्य है। धन्य है मैया ! तुं धन्य है ! इसीलिये भगवान् वाल्मीकि कहते हैं चमाशीला तो पृथिबी है परन्तु आप तो पृथिवी की भी पृथिवी हैं, लच्मी की भी लदमी हैं। आप अपने भर्ता का परब्रह्म परमात्मा श्रीराम का भी अपने वात्सल्य भाव से भरण पोषण करती हैं। जय हो माँ तुम्हारी जय हो । आपने उनके सुयश के लिये क्या-क्या नहीं किया ? और इम अभागों के लिये न जाने क्या-क्या किया ? कौन कह सकता है ? मां आपका वैभव अचिन्त्य है तब ''अन्येषां तत्र का कथा'' इस प्रकार सम्पूर्ण रामायण में आपका अप्रतिम प्रभाव सर्वत्र - 紫 紫 紫-वर्णन किया गया है।

श्रीमिथिला-नम्रो

सीतापदाम्मेाजपरागरक्तां विभाति भूमिः सुरतङ्घभूपिता ।

घनावली—मत्तमयूरिकावृता सौदामिनी तुङ्गतरङ्गमालिनी ॥

यत्रापि श्रीचन्द्रकला प्रभावात् प्रद्योतते चिद्घनता त्रिलोक्याम् ।

सर्वे पुरस्था हि सुखे निमग्नाः क्रोडन्ति व पञ्चजनाः सुखेन ॥

एवं महोत्साह विभूषितापुरी विभाति नित्यं सुदितैर्जनवृता ।

गहोत्तमा श्रीमिथिलोशपालिता श्रीजानकीपूर्णं कृपास्वरूपिणी ॥

महोत्तमा श्रीमिथिलोशपालिता श्रीजानकीपूर्णं कृपास्वरूपिणी ॥

इयं तु सा मिथिलारसाण्या साचात्स्वयं श्रीमिथिलेशपालिता ।

इयं तु सा मिथिलारसाण्या साचात्स्वयं श्रीमिथिलेशपालिता ॥

प्रसन्ताराधिपतुच्यशान्तिदा विभाति सर्वोत्तम मञ्डलेर्यु ता ॥

प्रसन्ताराधिपतुच्यशान्तिदा विभाति सर्वोत्तम संहिता, ब॰ २०

॥ ग्रथ श्रीजानकी शक्तीनां परिचय॥

। श्रीशिव उवाच ॥

संप्रवद्यामि जानक्याः त्रयः त्रिंशत्शक्तयः । निकटे संस्थिता नित्यं सर्वाभरण्यृपिताः॥ श्रीर्भु लीला तथोक्रष्टा कियायोगोन्नती तथा । ज्ञानप्रह्वी तथा सत्या कथिता चाप्यनुप्रहा ॥ ईशाना चैव कीर्तिश्र विद्येला क्रांतिलम्बिनी । चिन्द्रकापि तथा क्रूराक्रान्ता वैभीपग्गीतथा॥ चान्ता च नन्दिनीशोका शान्ता च विमलातथा। शुभदा शोभना पुराया कलाचाप्यथ मालिनी। महोदयाह्यादिनी च शक्तिरेका दशत्रिका । पश्यन्ति भृकुटी तस्याः जानक्याः नित्यमेव च ॥ श्रीश्र श्रीप्रेरिका ज्ञेया भूरंडाधार उच्यते । लीला वहु विधालीला उत्कृष्टीत्कर्ष प्रेरिका ॥ क्रिया शुभक्रिया सम्यग्योगा योगान्विता गतिः। उन्नती महतीवृद्धि ज्ञानाविज्ञान प्रेरिका ॥ करोति प्रेरणं सम्यक् प्रह्वीजय पराजयौ । सत्यस्य प्रेरिका सत्यानुप्रहाया दया गुणाः॥ ये च सर्वे जगन्मध्ये भेदा अपि सुदुस्तराः । ईशाना प्रेरिका तेपां वर्त्तते नात्र संशयः॥ यशोऽधिकारिणी कृत्तिर्विद्याधिकारिणी । सद्वाणी प्रेरिकेलास्या क्रांताक्रान्ति विवर्द्धिनी ॥ यानिधामानि सर्वाणि श्रीरामस्याद्भुतानि च । गुणाश्चानन्तरूपाणि श्रेरिकेषां विलाम्बनी ॥ सीतप्रकाशयोः सम्यक् प्रोरेका चिन्द्रकापि च । क्रूरत्वं प्रोरेका क्रूराभनो वाकाय कर्मभिः॥ ब्रेरिका चोभयोः कान्ता सततं राग मोहयोः । प्रतिका भींपणा तेषां ये च सर्वे भयादयः ॥ वर्तते शेरिका चान्ता चमायाश्र विशेषतः । नन्दिनी च तथा शक्तिः सर्वानन्द प्रदायिनी ॥ शोका स्त्रयं विशोका च लोकानां शोकप्रेरिका । शान्तिप्रदायिनीं शान्ता विमला विमलान्गुणान्। शुभदा सद्गुणान् शोभांत्ररेयन्ति च शोभना । पुग्या पुग्यगुणोपेता कला बहुकलावती ॥ मालिती व्यापकान्तर्वान्त्ररेयेच्च महोदयान् । विभवं प्रकृति भक्ति विस्तास्यति सर्वतः॥ श्राह्णादिनी महाह्यादं संबद्धयति सर्वदा । स्वे स्वे कार्यस्ताः सर्वाः त्रयः त्रिंशच्च शक्तयः ॥ यस्मिन् काले भवेद्यातां सीतारामानुशासनम् । तस्मिन् काले प्रदुर्वन्ति सर्वकार्यभशेषतः ॥ एकैकानां सहस्राणि वर्तन्ते चीपशक्तयः। न्यापका सर्वलोकेष सर्वतो गगनं दथा। जानक्यंशादि सम्भूतानेक इक्षाग्डकारिग्। सा मूल प्रकृतिईवां महामाया स्वरूपिग्।

इति श्रीमन्मकारामायणे उमामहें श्वरसम्बादे श्रीजानकी शक्तीनां परिचयो नाम एक पंचाशन् तमः सर्गं ॥ ४१ ॥

॥ श्रीजानकोशक्ति परिचय ॥

श्री शंकर जी ने कहा कि है पार्वती ! सर्व आभूपणों से अलंकृत श्री जानकी जी की से जो ३३ तेंतीस शक्तियाँ नित्य ही रहतीं हैं अब मैं उनका भिं भाँति वर्णन करता हूँ॥ १॥

श्री-भू-लीला-डत्कृष्टा-कृपा-योगा-डल्नित-ज्ञाना-प्राथीं-सात्या-अनुग्रहा-ईशाना-कीर्ति-विद्या कृति-कृति-लिन्ति-लिन्दिनी-चिन्द्रका-क्रूरा-क्रान्ता-भीषणी -क्षान्ता-निन्द्रनी-शोका - शान्ता-विमला-शुभदा-शोमना-पुण्या-कला-मालिनी-महोदया-आह्यादिनी-ये तैंतीस शक्तियां श्री जानकी जी की भृकुटी को निहारती रहती हैं अर्थात् आपकी आज्ञा की वाट जोहती रहती है।। २-३-४-५ ॥

श्रो शंकर जी अब उनके कार्यों का वर्एंन करते हैं कि-!- "श्रीदेवी" अखण्ड ब्रह्माएड व्यापिनी श्री लदमण जी की प्रेरिका महा शक्ति है। २- 'भू देवी' ब्रह्माएड को धारण करने वाली आधार शक्ति है । ३- ''लीला देवी'' प्रभु की अनन्तानन्त लीलाद्यों का विस्तार करतीं है। ४- 'उत्कृष्टा देवी' भक्त भगवान तथा धार्मिक जनों के उत्कर्ष की बढ़ाती रहतीं हैं। ५- "कृपा देवो' अनाथ जीवों के प्रति प्रभु की अनुकम्पा प्रकट करती हैं। ६- "योगा शक्ति" योग साधना में सिद्धि प्रदान करती है। ७- 'उन्नति शक्ति' धर्म तथा धार्मिक पुरुषों की प्रभु के शरणागतों की उन्नति की वृद्धि करती है । ८- ज्ञाना ज्ञान-विज्ञान की प्रेरणा करती है। \$- 'पर्वी शक्ति' जय-पराजय की प्रोरणा करती है, भक्तों की विजय-अभक्तों की पराजय श्राप की इच्छा से होती है। १०- 'सत्या देवी' सत्यज्ञान-सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा करती है। ११- 'अनुम्रहा शक्ति' दया-कृपा-करुणा आदि दिव्य गुण प्रदान करती है। भक्त पर भगवान् का ऋतु मह कराती है। १२- 'ईशाना शक्ति' संसार में जो अति दुस्तर भेद-भावना है, उसकी प्रेरिका है। भेद डालकर शतुओं का पराजय तथा भेद डालकर दुष्टों का विनाश तथा सन्तों का संरक्षण करना इनका कार्य है। इनका शासन सब पर रहता है। १३- 'कीर्नि देवो' सुयश के अधिकारियों को कीर्ति प्रदान करती है। १४- 'विद्या देवी' जिज्ञा-मुओं को ब्रह्मविद्या तथा विद्यार्थियों को धारणा शक्ति प्रदान करती हैं। १५-'ईला शक्ति' धुन्दर वागी प्रदान करती है। १६-क न्ता शक्ति जन कान्ति की प्रदेशा कर दुष्ट शापकों को नव्ट करती है। १७-'लिन्बि । शाकित' श्रीराम के जो जो श्रद्भुत गुगा-लीला-धाम-नाम तथा अनन्त रूप है उपकी अभिवृद्धि करती है। १८- 'चिन्सिका देवा' शानलना तथा सौम्य भकाश को प्रेरिका है। १९- 'क्रूरा शक्ति' दुर जनों के तन-मन-ववन में क्रूरता उत्तन देनको अद्योगित में भेन देती है। २०- 'क्रान्ता देवी' इनिधकारियों को सदैव राग-द्वेप-मोह माया से आकान्त किये रहती है। २१- भीषणी शक्ति समयानुकूल सज्जनों को पाप कर्म से वैशा दुष्टों को शत्रुपों से भूत प्रेतादिक से भयभीत करने के कार्य में निरत रहती है। २२-भारता रेवी सहनशीलता तथा अपराधों को क्षमा कराने की शिवत प्रदान करती है। २३'निन्दिनी देवी' सज्जनों को परमानन्द प्रदान कराती रहती है। २४-'शोका शक्ति' स्वयं विशेष 'निन्दनी देवी' सजाना का परणा करती है। सजानों को अपनी भूल से हुए कुकर्मी का शोह रहकर लोकों में शोक की प्रेरणा करती है। सजानों को अपनी भूल से हुए कुकर्मी का शोह रहकर लोकों म शाक जा गर्म का शक यही प्रदान करती है। २५- 'शान्ता शक्ति' जीवों के तथा संसारी को धन-पुत्रादिका शोक यही प्रदान करती है। २५- 'शान्ता शक्ति' जीवों के तथा संसारा का धन-3211 करती है। २६- 'विमला देवी' हृदय को निर्मल बनाफर किए प्रम शाश्वत शाम्त अवस्य मिन करती हैं। २७- 'शुभदा शक्ति' शुभ कार्य में प्ररित करती है। २८- 'शोक शक्ति शामा-सुन्दर्श अने क कताओं में प्रवीण करती है। ३१- 'मालिनी देवी' सुवश को कि माला के सौरभ के के समान व्यापक बनाती है। ३२- 'महोदया शक्ति' वेभव, भिक्त, है तथा प्राकृतिक सम्मान का महान् उदय कर जीव को भाग्यशाली बनाती है। ३३- "वाह्न दिनी शक्ति" महान् दिव्य आह्मादिकी निरन्तर् वृद्धि करती है। सिच्छदान्त परम हु प्रदान करती है। ये तैंतीस शक्तियां अपने-अपने कार्य में सदा तत्वर रहतीं हैं। जिस स्व जिसको श्री सीताराम जी की जो आज्ञात्रप्रतासन प्राप्त होता है। उसी समय वह आज्ञानुस सम्पूर्ण कार्य करती है।। इन एक-एक शक्तियों की आज्ञाकारिगी सहस्रों-हजारों उपशक्ति रहतीं है, जो इनका कार्य शीव सिद्ध करने में सदेव उद्यत रहती हैं। तथा वे आकाश भांति सर्वत्र सर्व लोकों में व्याप्त हैं। ये शक्तियाँ श्री जानकी जी की अंश कलाओं से उत हैं अनेक ब्रह्माण्ड की रचना करना इनका खेलकौतुक हैं। इनकी अधिष्ठात्री सर्वेश्वरी श्रीकी जी ही मूल प्रकृति हैं, वही महामाया स्वरूपिणी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र सत्तःधारी हैं। -श्लोक ६ से २१ परंत

यह श्रीमन्महारामायगान्तर्गत श्री उमामहेश्वर संवादात्मक श्रीसीता श्री वर्णनात्मक एकावनवें सर्ग का श्रनुवाद सम्पूर्ण हुआ ।। ५१ ॥

—:**%**:—

ा जय सचराचर स्व मिनि ।। जय सदोधत धराधारे । हृतधारित्री विपुल भारे । जय जगनमातगुंगागरं, महोदारे हे ।। जनक मिह महनीय कन्ये, शिवविरिंग्च प्रभृतिमान्ये । रमा—गौरीजनबदान्ये—यशोहारे हे ।। सदाऽनाहत जलजवासे—पापतृल महाहुताशे । प्रिताऽखिल सुरजनाशे—निराकारे हे ।। रामधनचपले सुकामिनि—जय चराचर वर स्वामिनि । रूपिजत कन्दपभामिनी—शिक्तसारे हे ।।

श्रीसीतारामऐक्यवर्णनाष्टकस्तोहाम्

बानिकीप्रकृतिः सृब्देरादिभूता महागुणा। तपः सिद्धिः स्वगैसिद्धि भूँ तिर्मू तिमतो सतो ॥ विद्याबिद्या च महती गीयते बह्मवाविभिः। ऋद्धिःसिद्धिर्गुण्मयो गुणातीता गुणातिमका। वह्म बह्माण्डसम्भूता सर्वकारणकारणा। प्रकृतिविकृतिर्देवी चिन्मयी चिद्वलासिनी ॥ महाकुण्डलिनी सर्वानुस्यूता ब्रह्मसंज्ञिता। यस्याबिलसितं सर्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ महाकुण्डलिनी हृद् यून्थिभविनस्तत्त्व दिश्वनः। विघट्टयन्ति हृद् यून्थिभवन्ति सुखमूर्तिकाः॥ यामाधाय हृदि ब्रह्मन्योगिनस्तत्त्व दिश्वनः। विघट्टयन्ति हृद् यून्थिभवन्ति सुखमूर्तिकाः॥ रामः साक्षात्परंज्योतिः परंधाम परःपुमान्। श्राकृतौ परमो भेदो न सीतारामयोयंतः॥

रामः सीता जानको रामचन्द्रो नाग्युर्भेदो नैतयोरस्ति किञ्चित् । सन्तो बुघ्वा तत्त्वमेतद्विबुद्धा पारं याता संमृतेमृं युचकात् ॥७॥ रामोऽचिन्त्योनित्य चित्सर्व साक्षी सर्वान्तःस्थ सर्वलोकैक कर्ता । भर्ता हर्ता नन्द पूर्तिर्विभूमा सीतायोगाच्चिन्त्यते योगिभिः सः ॥८॥ ॥ इति श्री अद्भुतरामायगोक्तं श्रीसीताराम ऐक्य वर्णनाष्टक स्तोत्रम् ॥



॥ श्रीस ता-राम ऐक्यवर्णनाष्टकस्तोत्रम् ॥

श्रीसीता सृष्टि की मूल कारणभूता आदि महाप्रकृति हैं, महा गुणान्विता है, तर तथा स्वां सिद्धि स्वरूप हैं। ऐश्वयं की साक्षात् मूर्ति है, सती है। १ ॥ त्रह्मवादी जिसको विद्या-स्वां सिद्धि स्वरूप है। ऐश्वयं की साक्षात् मूर्ति है, सती है। १ ॥ त्रह्मवादी जिसको विद्या-सिद्धि-गुणमयी गुणातीता-गुणात्मिका महती शक्ति कहकर गान करते हैं।।।।। अविद्या-त्रहि सभी कारणे हैं, जो प्रकृति जो ब्रह्मत्वरूप है, त्रद्धाण्ड को वत्पन्न करने वाली है, सभी कारणों का कारणे हैं, जो प्रकृति विकृति-चिन्मयी-चिद्धिलासनी-देवी आदि नामों से सुविष्ट्यात है।। ३।। जो महा कुण्डिलनी विकृति-चिन्मयी-चिद्धिलासनी-देवी आदि नामों से सुविष्ट्यात है।। ३।। जो महा कुण्डिलनी कमाने ही है।। ४।। जिनका अन्तःकरणे में निर्मल ध्यान करके योगीजन ध्रपने हत्य की कमाने ही है।। ४।। जनका अन्तःकरणे में निर्मल ध्यान करके योगीजन ध्रपने हत्य की कमाने ही है।। ४।। जन श्रीसीताजों के प्राण-प्रज्ञानमयी प्रन्थी का भेदन करके मुख स्वरूप हो जाते हैं।। १।। उन श्रीसीताजों के प्राण-प्रज्ञानमयी प्रन्थी का भेदन करके मुख स्वरूप हो जाते हैं।। १।। उन श्रीसीताजों में प्राण-प्रज्ञानमयी प्रन्थी का भेदन करके मुख स्वरूप हो जाते हैं।। ३।। अकार में महान भेद विकृत पर भी श्रीसीतारामजी युगल स्वरूप में तत्त्वतः कुछ भी भेद नहीं है।। ६।। सीता दीखन पर भी श्रीसीतारामजी युगल स्वरूप में तत्त्वतः कुछ भी भेद नहीं है।। ६।। सीता

ही राम हैं, रामचन्द्र जी ही सीताजी हैं, इनमें अगुमात्र भी भेद है ही नहीं, इस रहस्य को भलीभाँति जान कर सन्त-महात्मा संस्रुति चक्र से सहज ही पार उतर गये हैं। ७ ॥ श्रीराम अचिन्त्य हैं-नित्य सिच्चिदानन्द-सर्वसाची हैं, सर्वान्तः करण ज्यापी हैं, सर्वलोकों के एकमात्र कर्ता हैं, सर्वलोक भर्ता तथा सर्वलोक हर्ता भी हैं, वे श्रानन्द मूर्ति हैं भूमा पुरुष हैं, उनका ध्यान श्रीसीताजी के साथ ही योगीन्द्र महापुरुष करते हैं ॥ ८॥

"यह श्रीग्रद्धत रामायगोक्त श्रीमीताराम ऐक्य वर्णानाव्टक स्तोत्र सम्पूर्ण हुग्रा।"



-: अथ श्री मुद्रिकाट्टकम् :-

सोताकर सरोजस्य बले किल विराजिताम् । स्वज्ञुली भूषणं तस्मान्मुद्रिकाख्यां नमाम्यहम् । श्रीरामो योगिभिष्ट्ययः सोऽिष ध्यायित यां सदा । सीतानामाङ्क संयुक्तां मुद्रिकां प्रग्रमाम्यहम् । वेजोमण्डल सन्दर्भे भक्तानां हृदये तमः । हारिणी प्रकुरु श्रयो जानकी मुद्रिके हि मे ॥ कृपाणात्रस्य जानक्या जनकस्य मस्तकोषरि । बितिनी सर्वलोकेष्वभयदां मुद्रिकां स्तुमः ॥ ग्रादर्शं वर्तुलाकारे कपोले स्थामसुन्दरे । स्फुरन्तीं राजपुत्रस्य दक्षे सीतोभिकां स्तुमः ॥ यस्या ग्रंशोद्भवा माया जगदुत्पादितुं क्षमा । सीताङ्गुल्योमिकां सा मे श्रेयोदिशतु सर्वदा ॥ ग्रंगुष्टस्यापि तर्जन्यां मध्यया या मनोहराम् । रामस्य राजपुत्रस्य जानक्या मुद्रिकां स्तुमः ॥ किनिष्ठाया उर्मिकां चानामिकायास्तथेव च । विश्वन्तीं मण्डल नौमि जानक्याःकरयोद्वयाः ॥ चिद्रिका मुद्रिका वाण् धनुषां च स्तवादिक्ष् । उमामहेश्वरोक्तं च स्त्रियो वा पुरुषा ग्राप ॥ पठन्ति निथमान्नित्यं सायं प्रातस्तु भक्तितः । सायुज्य ते प्राप्नुवन्ति सीताया राघ्रवस्य न ॥ पठन्ति निथमान्नित्यं सायं प्रातस्तु भक्तितः । सायुज्य ते प्राप्नुवन्ति सीताया राघ्रवस्य न ॥ ॥ इति श्रीशङ्करकते श्रीश्रमररामायणे श्रीसीताराम-रत्नमञ्जूषायां पावंती संस्कारो नाम

प्रथमसंसर्गः भि



॥ श्रीसीता--ऐश्वर्ध वर्णन स्तोहाम [श्रीराम-श्रोक्तम्]

एवं नाम सहस्रोण स्तुत्वाड्नी रघुनन्दनः । भ्रयः प्रणम्यप्रीतात्मा प्रोवाचेदंकृताज्ञलिः ॥१॥ यदेतदेश्वरं रूपं घोरं ते परमेश्वरि । भीतोऽस्मि साम्प्रतं दृष्ट्वा रूपमन्यत्प्रदर्शय ॥२॥ एवमुक्ताऽथ सा देवी तेन रामेण मैथिलीं। संहत्य दर्शयामास स्वरूपं परमं पुनः ॥३॥ काञ्चनम्बुरुह प्रख्यं पद्मोत्पलसुगन्धिकम् । सुनेत्रं द्विञ्चजं सौम्यं नीलालकविश्विषत्म् ॥४॥ रक्तपादाम्बुजतलं सुरक्तकरपरलवम् । श्रीमद्विशाल सद्वृत्त ललाटतिलकोज्ज्वलम् ॥५॥ भुवितं चारुसर्राङ्गं भुवणैरिभशोभितम् । दधानं सुरसां मालां विशालां हेर्मनिर्मिताम् ॥६॥ सुविम्बोर्छं न् पुराम्बरसंयुतम् । प्रसंत्रवदनं दिव्यमनन्तमहिमास्पदम् ।।।।। तदीदृशं समालोक्य रूपं रघुकुलोत्तमः । भीति संत्यज्य हृष्टात्मावमापे परमेश्वरीम ॥ । । श्रद्यमेसफर्जं जन्म श्रद्यमे सफलंतपः । यन्मे साचान्यमन्यक्त प्रसन्ता दृष्टिगोचरा ॥६॥ त्वया सुष्टं जगत्सर्वं प्रधानाद्यं त्वियिस्थितम् । त्वय्येव लीयतेदेवि त्वमेव च परागतिः ॥१०॥ वद्नित केचित्रामेव प्रकृति विकृतेः परम्। अपरे परमात्मज्ञाः शिवति शिवसंश्रये ॥११॥ त्विय प्रधानं पुरुषो महान्त्रक्षा तथेश्वरः । अविद्या नियतिमीया कालाद्याःशतशोऽभवन् ॥१२॥ त्वंहि सा परमा शक्तिरनन्ता परमेष्ठिनी । सर्वभेद विनिष्ठ का सर्वभेदाश्रया निजा ॥१३॥ त्वामधिष्ठाय योगेशि पुरुषः परमेश्वरीम् । प्रधानाद्यं जगत्कृतस्नं करोति विकरोति च ॥१४॥

इस प्रकार रघुनन्दन सहस्रनाम से रतुति करके फिर हाथ जोड़ प्रणाम कर जानकी से कहने लगे ॥ १ ॥ है परमे । जो यह तेरा घोर परमेश्वर सम्बन्धी रूप है इससे मैं भयभीत हो रहा हूं, इस कारण इसे शान्त कर सौम्य रूप दिखाओ ॥ २ ॥

जबाराम ने मैथिली जानकी से ऐसा कहा तब जानकी ते अपना रूप शान्त कर सौम्य रूप दिखलाया ॥ ३ ॥ जो कञ्चन के कमल के समान पद्मादल के समान, सुगन्धि वाला सुन्दर नेत्र दो भुजा, नीली अलकों से विभूषित ॥ ४॥

लाल चरण लाल करवल्लव श्रीमान् विशाल सद्वृत्त ललाट के ऊपर उज्वल तिलक लगाये ॥ १ ॥ सम्पूर्ण सुन्दर अङ्ग भूषणों से सुशोभित विशाल सुवर्ण निर्मित सुरमाला धारण किये ॥ दे ॥ कुछेक हारययुक्त विम्बाफल के समान ओष्ठ, नूपुर और अम्बर से संयुक्त प्रसन्न मुख दिव्य श्रौर अनन्त महिमा का स्थान ॥ ७ ॥ रघुनाथ जी जानकी का इसका प्रकार का रूप देखकर भय को त्याग प्रसन्न हो परमेश्वरी से कहने लगे ॥ ८ ॥

अाज मेरा जन्म और तप सफल है जो तुम अन्यक्ता साद्यात् मेरी दृष्टि के सन्मुख हुई हो श्रीर जन्म और तप सफल है जो तुम अन्यक्ता साद्यात् मेरी दृष्टि के सन्मुख हुई हो श्रीर प्रसन्न हुई हो श्रीर श्री तुमने ही सब जगत् निर्माण किया है और यह प्रधानादि जो हो और प्रसन्न हुई हो श्री श्री तुम में ही लय हो जाता है, तुम ही परागित हो श्री तुममें स्थित है, हे देवि ! यह अन्त में तुम में ही लय हो जाता है, तुम ही परागित हो श्री तुममें स्थित है, हे देवि ! यह अन्त में तुम में ही लय हो जाता है, परमात्मा को जानने वाले शिव के कोई तुमही को प्रकृति तथा विकृति से परे कहते हैं, परमात्मा को जानने वाले शिव के

तुम अनन्त परमेष्ट्रिनी परम शक्ति हो सब भेदों से निर्मुक्त सब भेदों के आश्रय वाली निज स्त्ररूप हो ॥ १३ ॥ हे योगेशि ! तुम परमेश्वर को प्राप्त होकर पुरुष प्रधानादि सब जगन् को निर्माण कर फिर संहार करती हो ॥ १४ ॥

त्वयैव सं ातो देवः स्वमानन्दं समश्तुते । त्वमेव परमानन्दस्त्यमेवानन्द दायिनो ॥१५॥ त्वमेव परमंग्योम महाज्योतिर्निरञ्जनम् । शिवं सर्वंगतं सूक्ष्मंपरंब्रह्म सनातनम् ॥१६॥ त्वं शकः ववदेवानां ब्रह्माब्रह्म विदानि । सांख्यानां किपलोदेवो रुद्रागामिस शंकरः॥१७॥ स्मादित्यानामुपेन्द्रस्त्वं वसूनां चैव पावकः । वेदानां सामवेदस्त्वं गायत्रीछन्दसामि ॥१६॥ स्मादित्यानामुपेन्द्रस्त्वं वसूनां चैव पावकः । वेदानां सामवेदस्त्वं गायत्रीछन्दसामि ॥१६॥ स्मादित्यावद्यानां गीतानां परमागितः । माया त्वं सर्वशक्तीनां कालः कलयतामि ॥ स्माद्यानां वर्णांनां च द्विजोत्तमः । स्माश्रमाणां गृहस्थस्त्वमीश्वराणां महेश्वरः ॥ पुंसां त्वमेव पुरुषः सर्वभूतहृदिस्थितः । सर्वोपनिषदो देवि गुह्योपनिषदुच्येते ॥२१॥ पुंसां त्वमेव पुरुषः सर्वभूतहृदिस्थितः । सर्वोपनिषदो देवि गुह्योपनिषदुच्येते ॥२॥ द्वां चाि भूतानां युगानां कृतमेव च । स्मादित्यः सर्वामार्गाणां वाचां देविसरस्वतो ॥२॥ त्वां लक्ष्मीश्चारुष्टपाणां विष्णुर्मायाविनामिष । स्मरुष्टि स्थानां युणां शतरिष्णि सूक्तानां पौरुषं वक्तं ज्येष्ठं साम च सामसु । सािवित्र ह्यसि जप्यानां यजुषां शतरिष्णि सूक्तानां पहामेरुरनत्तो भौगिनामिस । सर्वेषां त्वां परंब्रह्म त्वन्मयं सर्व एव हि ॥१॥ पर्वातानं वहामेरुरनत्तो भौगिनामिस । सर्वेषां त्वां परंब्रह्म त्वन्मयं सर्व एव हि ॥१॥

रूप तवाशेष कलाविहीनमगोचरं निर्मलमेकरूपम् । श्रुनादिमध्यान्तमनन्तमाद्यं नमामि सत्यं तमसः परस्तात् ॥२६॥ यदेवपश्यन्ति जगत्प्रसूर्ति वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्थाः । श्रुनन्दमात्रं परमाविधानं तदेवरूपं प्रण्तोऽस्मि नित्यम् ॥२७॥ श्रुशेषसूत्रान्तरसिन्निद्यदं प्रधानसयोग वियोग हेतुः । तेजोमय जन्मविनाशहीनं प्राणाभि धानं प्रण्होऽस्मि रूपम् ॥२६॥ तेजोमय जन्मविनाशहीनं प्राणाभि धानं प्रण्होऽस्मि रूपम् ॥२६॥

तुम्हारी सङ्गिति से अपने आनन्द को प्राप्त होता है, तुम ही परमानन्द श्रोर आनन्द को देने बाली हो।। १५।। तू ही परमाकाण महाज्योति निरञ्जन है, णिव सर्वगत सूदम पर- बहा सनातन है।। १६।। तुम सब देवताओं के इन्द्र, ब्रह्मज्ञानियों के ब्रह्म हो, सांख्यों में बिलहेब, हों में शंकर हो।। १७।। आदित्यों में उपेन्द्र श्रोर वस्तुओं में पावक हो, वेदों में सामवेद और ब्रन्दों में गायत्री हो।। १८।।

विद्या में अध्यातम विद्या गतियों में परमगित सर्व शिक्तयों की माया श्रीर किलत करने वालों में काल तुम हो ।। १९ ।। सम्पूर्ण गुद्धों में ॐकार तुम हो वर्णों में ब्राह्मण, आश्रमों में गृहस्थ और ईपवरों में महेश्वर तुम हो ।। २० ॥

पुरुषों में पुरुष सब भूतों के हृदय में तुम स्थित हो हे देवि ! सम्पूर्ण उपनिवदों में गुप्त बानिषद् तुम हो ॥ २१ ॥ राजों में ईशता, खौर युग में सत्ययुग तुम हो, विचरादि सब मार्गों में आदित्य, वाणियों में सरस्वती देवी तुम हो ॥ २२ ॥ सुन्दर रूप वालों में विष्णु सितयों में अरुन्धती, पित्तयों में गरुड़ तुम हो ॥ २३ ॥ वेद के सूक्तों में पुरुष सूक्त साम में ब्येष्ट साम, जपों में सावित्री, खौर यजुषों में शतरुद्रिय तुम हो ॥ २४ ॥

पर्वतों में मेर, भोगियों (सर्वो) में अनन्त, सबके परब्रह्म तुम हो यह सब तुममें हैं ॥ २५ ॥ तुम्हारा रूप सब काल से बिहीन अगोचर निर्मल एक है, आदि अन्त मध्य रहित अनन्त तुमसे परे, सबकी आदि तुमको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २६ ॥

जो वेदान्त के विज्ञान से निश्चित अर्थ वाले होकर इस जगत् की प्रसृति तमको जब देखते हैं, आनन्दमय परम तुम्हारे रूप को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ ॥ २७ ॥ सम्पूर्ण के स्त्रान्तर में सिल्लिबिष्ट प्रधान संयोग-वियोग के हेतु तेजोमय जन्म विनाश से हीन प्राण्रूप तुमको मैं नित्य नमस्कार करता हूँ ॥ ॥ २८ ॥

प्राचन्तहीनं जगदात्मरूपं विभिन्नसंस्थं प्रकृतेः परस्तात् ।
क्टस्थमव्यक्तवपुस्तवैव नमामि रूपं पुरुषाभिधानम् ॥२९॥
सर्वाश्रयं सर्वजगिन्नधानं सर्वत्रगं जन्म विनाशहीनम् ।
नतोऽस्मिते रूपमणु प्रभेदमाद्यं महत्वे पुरुषानुरूपम् ॥३०॥
प्रकृत्यवस्थं त्रिगुणात्मबीउ मैश्वयं विज्ञान विराग धर्मे ।
समन्दितं देवि नतोऽस्मिरूपं द्विसप्तलोकात्मकमम्बु संस्थम् ॥३१॥
विचित्रभेदं पुरुषैक नाथमनन्त भूतैविनि वासितं ते ।
नतोऽस्मि रूपं जगदगुड संज्ञमशेष वेदान्तक मेक माद्यम् ॥३२॥
स्वतेजसा पूरित लोकभेदं नमामि रूपं रिवमण्डलस्थम् ।

सहस्रमूर्द्धानमनन्त शक्ति सहस्रवाहुं पुरुषं पुराग्रम् ॥
शयानमन्तः सिलले तवैव नारायगाख्यं प्रग्रातोऽस्मि रूपम् ॥३३॥
द्रंष्ट्राकरालं त्रिदशाभिवन्द्यं युगान्तकालानलकल्परूपम् ।
श्रशेष भूताण्ड विनाशहेतुं नमामिरूपं तव कालसंज्ञम् ॥३४॥
फर्गासहस्रोग् विराजमानं श्रुवस्तलेऽधिष्ठितमप्रमेयम् ।
श्रशेष भारोद्वहने समर्थं नमामि ते रूपमनन्त संज्ञम् ॥३४॥
श्रशेष भारोद्वहने समर्थं नमामि ते रूपमनन्त संज्ञम् ॥३४॥
श्रवयाहतैश्वयंमयुग्मनेत्रं ब्रह्मात्मतानं दरसंज्ञमेकम् ।
युगान्तशेषं दिवि नृत्यमानं नतोऽस्मि रूपं तवरुद्रसंज्ञम् ॥३६॥

शादि अन्त से हीन जगत् के आत्मा रूप भिन्न संस्थावान्, प्रकृति से परे, फूटस्थ अव्यक्त शरीर पुरुष रूप तुमको नित्य नमस्कार करता हूँ ॥ २९ ॥ सबके आश्रय, सब जगत् के निधान, सब स्थान में जाने वाले जन्म विनाश से रहित, अनुप्रभेद आधा महत्व पुरुष अनुरुष तुम्हारे रूप को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ४० ॥ प्रकृति की अवस्था वाला; त्रिगुणात्म बीज ऐश्वयं विज्ञान विराग धर्मों से युक्त, चौदह लोकात्मक, जल में स्थित आपके रूप को नमस्कार करता हूँ ॥ ३१ ॥ विचित्र भेद पुरुष एकनाथ अनन्त भूतों से निवासित जगत् के अंज संज्ञक अशेष वेद आद्य तुम्हारे रूप को नमस्कार करता हूँ सहस्त्रबाहु पुराण पुरुष जल के भीतर शयन करने वाले नारायणाख्य आपके रूप को नमस्कार करता हूँ ।। ३३ ॥ कराज ढाढ़ों वाला देवताओं से नमस्कृत युगान्त कालानल के समान प्रकाणित सम्पूर्ण भूत अण्ड के विनाश कारण कालसंज्ञक तुम्हारे रूप को नमस्कार करता हूँ ॥ ३४ ॥ सहस्रफणों से विराज्ञमान पृथिवी तल में स्थित अप्रमेय सम्पूर्ण भार के उद्घहन करने में समर्थ अनन्त सँज्ञक अव्याहन तेम्वयं नेत्रद्वय वाले ब्रह्मानन्द में स्थित स्वर्ग में नाचने वाले ऐसे तुम्हारे रुद्र रूप को नमस्कार करता हूं ॥ ३५–३६ ॥

प्रहीणशोकं विमलं पिवत्रं सुरासुरैरिनत पादयुग्मम् ।
सुकोमलं देवि विशालशुश्चं नमामि ते रूपिमदं नमामि ॥३७॥
एतावदुक्त्वा वचनं रघराजञ्जलोहहः । संप्रचमाणो ठौदेहीं प्राञ्जलिः पार्धतोऽभवत् ॥
प्रय सा तस्य वचनं निशम्य जगतीपतेः । सिमतं प्राहभतिरं भ्रृणुद्धौकं वचोमम् ॥
गृहीतं यन्मयारूपं रादणस्य दधाय हि । तेनरूपेण राजेन्द्र वसामि मानसोत्तरे ॥
प्रकृत्या नीलरूपस्त्वं लोहितोरादणार्दितः । नीललोहित रूपेण रवया सह वशाग्वहम् ॥
गृहाण च वरंराम मत्तो यदिभवाञ्चितम् । तस्त्रुश्वा राघवोबीरः प्रतिश्रुर्विगरोहियतम् ॥

प्राहाजांशभागेन ययाचे परमेश्वरीप् । वेशि सीते महाभागे!विश्वतं रूपमेश्वरप् ॥

हिवाह्मीप् गच्छेत्तत् इति मे दीयतां वरः । भ्रातरो मम कल्यािशा वानराः सित्रमीयसाः ॥

हिवाह्मीप् गच्छेत्तत् इति मे दीयतां वरः । भ्रातरो मम कल्यािशा वानराः सित्रमीयसाः ॥

हिनात्वो मम नैदेहि! श्रयोध्यायोध मुख्यकाः । पुनस्ते संगताः सन्तु मया रावस्त्रतिताः ॥

हिमहान्तरे चाभूदाकाशे दुंदुभिस्वनः । पपातपुष्प दृष्टिश्च रामसीतोपरिद्विज ॥

प्रहस्य सीता पुनराह रामं तथेित रामोऽपि विरिश्च मुख्यान् ।

सताश्विसुज्य प्रतिगृह्यसोतां गन्तुं स्वकं देशमसावियेष ॥४७॥

हिस्यार्षे श्रीमद्रामायसे वाल्मीकीये अद्भुतोत्तरकारहे श्रीसीता ऐश्वयं वर्सनात्मक स्तीवं

नाम पडविंशतितमः सगैः ॥

शोक रहित विमल पवित्र सुर असुरों से अचित चरण कमल कोमल विशाल ग्रुभ इस सुम्हारे रूप को मैं प्रिणाम करता हूं ।। ३७ ।। राजा रयुकुल नन्दन राम हाथ लोड़े यह वचन कहते देवी के पार्श्व भाग में स्थित हुए ।। ३८ ।। तब जानकी जगत्यित के बचन श्रवण करके हंसती हुई रवामी से बोली हमारा आप एक बचन सुनिये ।। २७ ।। जो मैं ने रावण के बच के निमित्त यह रूप धारण किया है इस रूप से मैं मानस के उत्तर भाग में निवास करूँ गी ॥ ४० ॥ हे राम तुम प्रकृति से नील रूप हो रावण से श्रादित होने से लोहित वणें हुए सो नील लोहित रूप से तुम्हारे साथ मैं निवास करूँ गी ॥ ४१ ॥ हे राम ! जिस वर की इच्छा नील लोहित रूप से तुम्हारे साथ मैं निवास करूँ गी ॥ ४१ ॥ हे राम ! जिस वर की इच्छा हो सो आप मुक्तसे मांगिये, यह बचन सुन रामचन्द्र उस पर्वत की स्थिति को अङ्गीकार कर हो सो आप मुक्तसे मांगिये, यह बचन सुन रामचन्द्र उस पर्वत की स्थिति को अङ्गीकार कर हो सो आप मुक्तसे मांगिये, यह वचन सुन रामचन्द्र उस पर्वत की स्थिति को अङ्गीकार कर हो सो अप सुक्त है भरद्वाज ! अंश भाग द्वारा परमेश्वरी से मांगने लगे, हे महाभागे देवि सीते, ॥ ४२ ॥ हे भरद्वाज ! अंश भाग द्वारा परमेश्वरी से मांगने लगे, हे महाभागे देवि सीते, यह जो तुमने ईश्वर सम्बन्धी रूप दिखाया है ॥ ४३ ॥ यह कभी मेरे हृदय से न जाय यही यह जो तुमने ईश्वर सम्बन्धी रूप दिखाया है ॥ ४३ ॥ यह कभी मेरे हृदय से न जाय यही भर सुक्त दीजिये । हे कल्याणी मेरे श्राता वानर विभीषणादि सुहृद्द ॥ ४४ ॥ हमारे सब सेना भर सुक्त दीजिये । हे कल्याणी मेरे श्राता वानर विभीषणादि सुहृद्द ॥ ४४ ॥ हमारे सब सेना भर सीता के उत्तर फूलों की वर्षा भर सीता को हिले जाने हो हो लो तब होने लगी ॥ ४६ ॥ तब हंसकर जानकी रघुनाथ जी से कहने लगी कि ऐसा ही होगा तब होने लगी ॥ ४६ ॥ तब हंसकर जानकी रघुनाथ जी से कहने लगी कि ऐसा ही होगा तब होने लगी ॥ ४६ ॥ तब हैसकर जानकी रघुनाथ जी से कहने लगी कि ऐसा ही होगा तब होने लगी श्रा ॥ उत्तिवाओं को विदा कर सीता को हैले अपने देश जाने की इच्छा करने लगे रघुनाथ जी ब्रावादिक देशताओं को विदा कर सीता को हैले अपने देश जाने की इच्छा करने लगे सिला होते हो स्वार से किता हो स्वार साथ हो से कि स्वार स्वार से किता हो साथ हो स्वार स्वार से स्वार से स्वार साथ हो स्वार से स्वार से

॥ ४७॥ (श्री अद्भुत रामायण २६ सर्गः) विद्या बारिधि श्री ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत टीका सहित यह श्रीरामप्रोक्त श्रीसीता

ऐस्वर्य वर्णन् स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।

🌣 💥 श्रीसीता सहस्नाम स्तोताम् 💥 🗷

ब्रह्मणो वचनं श्रुत्वा रामः कमललोचनः । ग्रोन्भीत्य शनकैरिच वेपमानो महाग्रजः ॥१॥ प्रणम्य शिरसा भूमो तेजसा चापि विद्वल । मीतः कृताझिलिपुटः प्रोवाच परमेश्वरीम् ॥२॥ का त्वं देवि विशालाचि शशाङ्कावयवाङ्किते । न जाने त्वां महादेवि यथावद् मृहि एच्छते ॥३॥ रामस्य वचनं श्रुत्वा ततः सा परमेश्वरी । व्याजहार रधुश्रेष्टं योगिनामभयप्रदा ॥४॥ मां विद्धि परमां शक्ति महेश्वरसमाश्रयाम् । श्रनन्यामच्ययामेकां यां पश्यन्ति मुमुत्तवः ॥५॥ श्रहं वे सर्वभावानामात्मा सर्वान्तरा शिवा । शाश्वती सर्वविज्ञाना सर्वमूर्तिप्रवर्तिका ॥६॥ अनन्तानन्तमहिमा संवारार्णवतारिग्ती । दिव्यं ददामि ते चत्तुः पश्यमे पदमैश्वरम् ॥७॥ इत्युक्त्या विररामेपा रत्मोऽपश्यच्च तत्पद्य । कोटिख्र्यप्रतीकाशं विष्वक्तेजो निराकुलम् ॥८॥ ज्ञालावली सहस्राक्ष्यं कालानलशतीपमम् । दंष्ट्राकरालदुर्धर्षं जटामग्डलमग्डितम् ॥६॥ च घोररूपं भयावहम् । प्रशाम्यत्सौम्यवदनमनन्तैश्वर्यसंयुत्तम् ॥१०॥ चन्द्रावयवलचमाट्यं चन्द्रकोटिसमप्रभम् । किरीटिनं गदाहस्तं न्रूपुरेरुपशोभितम् ।।११॥ दिव्यमालाम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् । शङ्कचक्रकरं काम्यं त्रिनेत्रं कृत्तिवाससम् ॥१२॥ अन्तःस्थं चाग्रङत्राह्यस्थं बाह्याभ्यन्तरतः परम् । सर्वशक्तिमयं शान्तं सर्वाकारं सनातनम् ॥१३॥ ब्रह्मो न्द्रोपेन्द्रयोगीन्द्रेरीड्यमानपदाम्युजम् । सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽिच्चिशरोमुखम् ॥१४॥ सर्वमावृत्य तिष्ठन्तं ददर्श पदमैश्वरम् । हृष्ट्वा च तादृशं रूपं दिव्यं माहेश्वरं पद्म ॥१५॥ तर्वेव च समाविष्टः स रामो हृतमानसः । आत्मन्याधाय चात्मानमोंकारं समनुस्मरन् ॥१६॥ नाम्नामप्टसहस्रेण तुष्टात्र परमेश्वरीप् । ॐतीतोमा परमा शक्तिरनन्तान्ष्कितामला ॥१०॥ शान्ता महेश्वरी नित्या शाश्वती परमात्तरा । अचिन्त्या केवलानन्ता शिवात्मा परमात्मिका ॥ श्रनादिरव्यया शुद्धा देशात्मा सर्वगोचरा । एकानेकविभागस्था मायातीत सुनिर्मला ॥१८॥ महामाहेश्वरी शक्ता महादेशी निरञ्जता । काष्टा सर्वान्तरस्था च चिच्छिक्तिरतिलालसा ॥२०॥ जानकी मिथिलानन्दा राचासान्तविधायिनी । रावणान्तकरी रम्या रामवचः स्थलालया ॥२१॥ उमा सर्वात्मिका विद्या ज्योतीरूपायुताचरी । शान्तिः प्रतिष्ठा सर्वेषां निवृत्तिरमृतप्रदा ॥२२॥ व्योममूर्तिव्योमस्यी व्योमाधाराच्युतालता। अनादिनिधना योषा कारणात्मा कलाकुला ॥२३॥

11

-

311

1

1

नाभिरमृतस्यान्तसंश्रया । प्राणेश्वरिषया माता महामहिष वाहना ॥२४॥ बाबोहबरी प्राण्हिया प्रधानपुरुषेश्वरी । सर्वशक्तिः कलाकाष्टाज्योत्स्नेन्दोर्महिमास्पदा ॥२५॥ सर्वकार्वनियन्त्री च सर्वभृतेश्वरेश्वरी । अनादिरव्यक्तगुणा महानन्दा सनातनी ॥२६॥ बाकाशंबोतियाँगस्था सर्वयोगेश्वरेश्वरी । शवासना वितान्तस्था महेशवृषवाहना ॥२७॥ वातिका तक्षाी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा । महामाया सुवुष्पूरा मूलप्रकृतिरीश्वरी ।। २८ ॥ र्वंतारयोनिः सकला सर्वशक्तिसमुद्भवा। संतारसारा दुर्वारा दुर्निरीक्ष्यादुरासदा ॥२९॥ व्राण्यक्तिः प्राण्यविद्या योगिनी परमा कला। महाविभूतिर्दुर्धर्षा मूलप्रकृतिसम्भवा॥३०॥ द्यनाद्यनन्तविभवा परात्मा पुरुषा बलो । सर्गस्थित्यन्तकरणी सुदुर्बाच्या दुरत्यया ॥३१॥ शब्दवीनिः शब्दमयी नादाख्या नादिवग्रहा । प्रधानपुरुषातीता प्रधानपुरुषात्मिका ॥३२॥ पुराणी चिन्नयी पुंतामादिः पुरुषरूपिणी । भूतान्तरात्मा क्टस्था महापुरुषसंज्ञिता ॥३३॥ सर्वशक्तिसमन्विता । व्यापिनी चानविद्यच्या प्रधानासुप्रवेशिनी ॥४४॥ बन्ममृत्युजरातीता क्षेत्रज्ञा शक्तिरव्यक्तलक्षणा मलवर्जिता। अनादिमायासम्भन्ना त्रितत्त्वा प्रकृतिगुँगः॥३५॥ महावाय। समुत्पन्ना तामसी पौरुषी ध्रुवा । व्यक्ताव्यक्तात्मिका कृष्णरक्तशुक्लप्रसूतिका।३६। सकार्या कार्यं जननी ब्रह्मास्या ब्रह्मसंश्रया । व्यक्ता प्रथमजा ब्राह्मी महती ज्ञानरूपिणी ॥ वैराग्येश्वयं वर्मात्मा ब्राह्म मूर्तिह बिस्थिता । जयदा जित्वरी जेत्री जयश्रीजंगशालिनी ॥३८॥ मुखदा शुभदा सत्या शुभा मंक्षोमकारिग्। श्रवांयोनिः स्वयम्भूतिर्मानसी तत्त्वसम्भवा ॥ ईश्वराणी च शर्वाणी शंकरार्थशारीरिणी। भवानी चैव रुद्राणी महालक्ष्मीरथाम्बिका ॥ माहेश्वरी समुत्वन्ना भुवितमुक्तिफलप्रदा। सर्वेश्वरी सर्वेदण् नित्या मुदितमानसा ॥४१॥ रघूत्तमपतित्रता ॥४२॥ शंकरेच्छानुवर्तिनी । इंश्वरार्धासनगता समुद्रपरिशोषिण्या । पार्वती हिमबत्पुत्री परमानन्बदायिनी ॥४३॥ बह्य न्द्रोपेन्द्रनमिता गुणाळ्या योगदा योग्या झानपूर्तिविकासिनी । सावित्री कमला लक्ष्मीः श्रीरनन्तोरसि स्थिता। सरोजनिलया गुम्त्रा योगनिद्रा सुदर्शना (सरस्वती सर्वविद्या जगज्ज्येच्ठा सुमङ्गला।।४५॥ वासबी बरदा बाच्या कीर्तिः सर्वार्थसाधिका । वागीश्वरी सर्वविद्या महाबिद्या सुशोभना ॥ गुह्मविद्याऽऽरमविद्या च सर्वविद्याऽऽश्मभाविता । स्वाह्य विश्वमभरीतिद्धिः स्ववा मेवा पृतिः वृतिः॥ नामिः सुनाभिः गुक्रतिमधिवी नरवाहिनी । पूज्या विभावशी सौध्या भितनी भोगवायिनी ॥ शोमा वंशकरीं सीला मानिनी परमेहिठनी । त्रेलोक्य मुन्दरी रम्या पुम्बरी कामबारिकी।

महानुभावमध्यस्था महामहिषमर्विनी । पद्ममाला वावहरा विचित्रमुकुटानना ॥ कान्ता चित्राम्यरथरा दिङ्याभरगाभूषिता । हंताख्या व्योमनिलया जनसृष्टिविर्विनी ॥ नियंन्त्रा मन्त्रवाहरूया नन्दिनी भद्रकालिका । श्रादित्यवर्गा कौमारी अयुरवरवाहिनी॥ शुपासनगता गौरी महाकाली सुराचिता। श्रदितिर्नियता रौद्री पद्मगर्मा विवाहना॥ विरूपाची लेलिहाना महासुरविनाशिनी । महाफलानवद्याङ्गी कामपूरा विभावरी॥ विचित्ररत्नमुकुटा प्रमातर्धिविवर्धिनी । कौशिकी कर्षिमी रात्रिस्द्रिद्शार्तिविनाशिनी ॥ विरूपा च सुरूपा च भीमा मौचायदायिनी । मक्तार्तिनाशिनी मन्या मयमायविनाशिनी ॥ निर्पु गा नित्वविभवा निरुपारा निरपत्रपा। यशस्त्रिनी सामगतिमेवाङ्गनिलयालया ॥ दीचा विद्याधरी दीप्ता महेन्द्रविनिपातिनी । सर्वातिशायिनी विद्या सर्वशक्ति प्रदायिनी ॥ सर्वेश्वरिया ताकी समुद्रान्तरवासिनी । श्रकलङ्का निराधारा नित्यसिद्धा निरामया ॥ कामधेनुर्वेदगर्भा धीमती मोहनाशिनी। निस्संकल्पा निरातङ्का विनया विनयप्रदा॥ ज्वालामालासहस्राढ्या देवदेशी मनोन्मनी । उर्वी गुर्ती गुरुः श्रेष्ठा सुगुणा पड्गुणातिमका ॥ महाभगवती भव्या वाबुदेव तमुद्रवा । महेन्द्रोपेन्द्रशागिनी भक्तिगम्यपरायणा ॥ ज्ञानज्ञेया जरातीता वेदान्तविषयागतिः। दिचागा दहना वाह्या सर्वभृतनमस्कृता॥ योगमाया विभावज्ञा महामोहा महीयसी । सत्या सर्वसमुद्धतित्र सन्नाश्रया मतिः॥ वीजाङ्कुरसमुद्धतिमहाशक्तिमहामितः । स्यातिः प्रतिज्ञा चित्संविन्महायोगेन्द्रशायिनी॥ विकृतिः शांकरी शास्त्री यत्तगन्धर्वसेविता । वैश्वानरी महाशाला देवसेना गुहप्रिया॥ महारात्रिः शिवानन्दा शची दुःस्वप्ननाःशनी । पूज्याऽऽपूज्या जगद्वात्री दुर्विञ्चेयस्वरूपिणी॥ गुहोत्पत्तिर्महापीठा मरुत्सुता । हव्यवाहान्तरा गार्गी हव्यबाहससुद्भवा॥ गुहा म्बिका जगद्यौनिर्जगनमाता जगनमृत्युर्जरातिगा । बुद्धिर्माता बुद्धिमती पुरुषान्तरवासिनी॥ तपस्त्रिनी समाधिस्या त्रिनेत्रा दिवि संस्थिता। सर्वेन्द्रियमनोमाता सर्वभृतहदि स्थिता॥ संसारतारिगी विद्या त्रहावादिमनीलया । त्रहागी बृहती ब्राह्मी ब्रह्मभूता भयाविनः॥ हिरगमयी महारात्रिः संसारपरिवर्तिका । सुमालिनी सुरूपा च तारिगी भाविनी प्रमा ॥ उन्मीलिनी सर्वेसहा सर्वप्रत्ययसाचिष्ीं । तिषेनीं तािषनीं विश्वा भागदा धारिणीं वरा ॥ सुसौम्या चन्द्रवद्ना ताग्डवासक्तमानसा । सत्त्वशुद्धिकरी शुद्धिमेलत्रयविनाशिनी ॥ जगित्रया जगन्त्रृतिस्त्रिम्तिरमृताश्रया । निराश्रया निराहारा निरङ्कुशरणोद्भवा

11

11

Sec.

Series a

क्रम्ता विभिन्नाङ्गी स्निम्बर्गी पणाधारिगी। परा परविधानना महायुग्ययुर्वजा ॥ क्रिक्ट विद्याविद्या विद्यक्तिह्या जितश्रमा । विद्यामयी महस्राक्षी महस्रश्रवणातमना ॥ महेश्वरपदाश्रया । ज्वालिनी सद्यना व्याप्ता तेजसी पद्मरोधिका ॥ हर्त्वराध्या मान्या महादेवमनोरमा । व्योमलक्ष्मीः सिंहरथा चेकिताग्यणितप्रमा ॥ विश्वेश्वरी विमानस्था विशोका शोकनाशिनी । ग्रनाहता कुण्डलिनी नलिनी पद्मवासिनी ।। वर पर कीर्तिः सर्वभूताशयस्थिता । वाग्देपता बह्यकला कलातीता कलावती ॥ ब्रह्मविष्णुशिवप्रिया । क्योमशक्तिः क्रियाशक्तिः जनशक्तिः परागति ॥ बहार्षित्र हाहदया होमिका रोद्रिकाभेद्या नेदानेदिवर्जिता । अभिन्ना भिन्नसंस्थाना गंशिनी शंशहारिणी ॥ गृह्यमित् गुंगातीता सर्वदा सर्वदोमुखी । भगिनी भगवत्वत्नी सकला कालकारिएति ॥ हर्ववित् सर्वतोभद्रा गुह्यातीता गुहाविलः । प्रक्रिया योगमाता च गन्धा विश्वेश्वरेश्वरी ॥ कविला कविलाकान्ता कनकामा कलान्तरा। पुण्या पुठकरिणी भोवत्री पुरंदर पुरस्सरा॥ परभैश्वर्यभूतिदा भूतिभूषणा । पश्चत्रह्मसमुत्पत्तिः परमात्माऽऽत्मविग्रहा ॥ नर्बादया भानुमती योगिक्रोया मनोजवा । बीजरूपा रजोरूपा बशिनी योगरूपिणी ॥ मुमन्त्रा मन्त्रिणी वूणाह्मादिनी क्लेशनाशिनी। मनोहरा मनोरत्ती तापसी वेदकपिणी॥ वेदविद्याप्रकाशिनी । योगेश्वरेश्वरी माला महाशक्तिमंनोमयी ॥ वेदशक्तिवेदमाता बिश्वाबस्था वीरमुक्तिर्विद्युन्माला बिहायसी । पीवरी सुरभी वन्द्या नन्दिनी नन्दवल्लभा ॥ भारती परमानन्दा परापरिविमेदिका । सर्वाप्रहरणोपेता काम्या व्यविन्याचिन्त्यमहिमा दुर्लेखा कनकप्रभा । कूष्माण्डो धनरत्नाढ्या मुगन्धा गन्धदायिनी ॥ विदिक्तनगरोद्भूता धनुष्पाणिः शिरोह्या । सुदुर्लमा धनाध्यत्ता धन्या पिङ्गललोचना ॥ म्रान्तिः प्रमावती दोप्तिः पङ्कागतलो बना। ग्राद्या हृत्कमलो द्भूता वरा माता रणप्रिया ॥ सिह्नवा गिरिजा नित्वशुद्धा पुष्पनिरन्तरा । दुर्गाकात्यांवनी चण्डी चर्विकाशांन्तविग्रहां ॥ हिरण्यत्या रजनी जगम्मन्त्रप्रवर्तिका। मन्दराद्रिनिवासा च शारदा स्वर्णमालिनी॥ रत्नमाना रत्नगमा पृथ्वी विश्वप्रमाधिनी । पद्मासता पद्मिनमा निस्वतुष्टापृतोद्भवा ॥ षुन्वती बुध्यकम्या च सूर्यमाता स्वद्वती। महेन्द्रमिति मावा वरेण्या वरवर्षिता ॥ क्लाको कमला रामापश्चमूतवरप्रवा। व वधा परेशवरी नग्छा वुर्ववा दुरतिकमा ॥ कातरात्रिमंहा वेगा वीरमद्रहित्रिया । भद्रकाली जगन्माता भवताना भद्रवाधिनी ॥

कराला पिङ्गलाकारा समावेदा महानदा । तपस्त्रिनी यशोदा च यथाध्वपिवितिनी ॥ कराला । पञ्चलानगरः । स्वाद्या सांख्ययोगप्रवर्तिका । चैत्री संवत्सरा रुद्रा जगत्सम्पूरणीन्त्रा । स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य । स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य । स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य । शाह्बना पानपा परमाणिनी । खरध्वजा खरारूढापराध्यी परमाणिनी ॥ शुम्मारः स्वयस्य स्वयं । जयन्ती हृद्गुहा रम्या सत्त्ववेगा गणात्रणीः एखवरत्नानवास सम्यस्था सर्विज्ञानदायिनीं । कलिकलमपहन्त्रीं च गुह्योपनिपदुत्तमा नित्यदृष्टिः स्पृतिर्व्याप्तिः पृष्टिस्तुष्टिः क्रियावती । विश्वामरेश्वरेशाना भ्रुक्तिमुक्तिः शिवामृता लोहिता सर्वमाता च भीषणा वनमालिनी । श्रनन्तशयनानाधा नरनारायणोद्धता॥ संकर्पणसमुत्पत्तिरम्बिकौपान्तसंश्रया॥ शङ्खचक्रगदाधरा दैत्यमिथनी -महाञ्याला महामृतिः सुमृतिः सर्वकामधुक् । सुप्रभा सुतरां गौरी धर्मकामार्थमोन्नदा॥ अमध्यनिलयापूर्वा प्रधानपुरुपा वंली । महाविभृतिदा मध्या त्रटाद्शस्त्रजा नाट्या नीलोत्पलदलप्रभा । सर्वशक्त्या समारूढा धर्माधर्मानुवर्जिता॥ वैराग्यज्ञानिदरता निरालोका निरिन्द्रिया । विचित्रगहना धीरा शाश्वतस्थानवासिनी॥ निरानन्दा त्रिशूलवरधारिगा। अशेषदेवतामूर्तिर्देवता गणात्मिका गिरेःपुत्रीं निशुम्मविनिपातिनी । स्रवर्णा वर्णरहिता निर्वर्णा वीजसम्मना॥ अनन्तवस्था शंकरीं शान्तमानसा । अगोत्रा गोमतीं गोप्त्री गुह्यरूपा गुसानता॥ गोशीर्गव्यप्रिया गोरी गगोश्वरनमस्कृता । सत्यमात्रा सत्यसंघा त्रिसंघ्या संधिविति ॥ सर्ववादाश्रया सांख्या सांख्ययोगसमुद्भवा । असंख्येयाप्रमेयाख्या शुन्या शुद्रकुलोह्ना॥ िन्दुनादत्तमुत्वितः शम्भुवामा शशिश्रभा । विसङ्गा भेदरहिता मनोज्ञा मधुमूदनी ॥ महाश्रीः श्रीतमुत्पत्तिस्तमः पारेप्रतिष्टिता । त्रितत्त्रमाता त्रिविधा सुमूद्मपद्संश्रवा॥ शान्त्यतीता मलातीता निर्विकारा निराश्रया । शिवार्या चित्रनिलया शिवज्ञानस्वस्पिती ॥ दैत्यदानयनिर्मात्रीं काश्यपी कालकर्षिएका । शास्त्रयोनिः प्रियामृर्तिश्रतुर्वर्गप्रदर्शिता नारायक्ती नवोद्युता कोंमुद्री लिङ्गधारिग्यी । कामुकी ललिता तारा परापरविभृतिरा परान्तजातमहिमा वहवा वाम.लोचना । सुभद्रा देवकी सीता वेदवेदाङ्गपारण मनस्त्रिनी मन्युमाता महामन्युसमुद्भवा । श्रमृत्युरमृतास्वादा पुरुहृता पुरु मिन्नविषया हिरग्यरजतिप्रया । हिरग्या राजती हैमी हेमामरगा विभाजमाना दुर्जेया ज्योतिष्टोमफलप्रदा । महानिद्रासमुद्धृता बलीन्द्रा धर

1

दीर्घा ककुद्मिनी विद्या शान्तिदा शान्तिविधनो । लक्ष्म्यादिशक्तिजननी शक्तिचक्रमृवर्तिका ॥ त्रिशक्तिजनेनी जन्या षड्मिपरिवर्जिता। स्वाहा च कर्मकरणी युगान्तदलनाहिमका।। संकर्षणा जगद्धात्री कामयोनिः किरोटिनी । ऐन्द्रीत्रैलोक्यनमिता वैष्णवी परमेश्वरी ॥ प्रद्युम्नदियता दान्ता युग्मदृष्टिस्त्रिलोचना । महोत्कटा हंसगितः प्रचण्डा चण्डविकमा ॥ वृषावेशा वियन्सात्रा विन्ध्यपवैतवासिनी । हिमवन्मेर्जनलया कैलासगिरिवासिनी ॥ चाण्रहन्त्री तनया नीतिज्ञा कामरूपिणी । वेदिवद्यात्रतरता धर्मशीलानिलाशना ॥ ब्रयोध्यानिलया वोरा महाकालसमुद्भवा । विद्याधरिक्रया सिद्धा विद्याधरिनराकृतिः ॥ श्राप्यायन्तीं वहःती च पावनी पोषणीखिला। मातृका मन्मथोद्भूता वारिजा वाहनिप्रया ॥ करीषणी स्त्रधा वाणी बीए।वादनतत्परा। सेविता सेविका सेवा सिनीवाली गरुत्मती।। भ्रहन्धती हिरण्याक्षी मणिदा श्रीवसुप्रदा विसुमती वसोर्धारा वसुन्धरासमुद्भवा ॥ वरारोहा वराही चावपुस्सङ्गसमुद्भवा । श्रीफला श्रोमती श्रीशा श्रीनिवासा हरिप्रिया ॥ श्रीधरी श्रीकरी कम्प्रा श्रीधरा ईशवीरणी । श्रनन्तदृष्टिरक्षद्रा धात्रीशा धनदिप्रया ।। निहन्त्री दैत्यसिहानां सिहिका सिहवाहिनी। सुसेना चन्द्रनिलया सुकीर्तिश्छन्नसंशया॥ बलज्ञा बलदा वामा लेलिहानामृतजीविनी। नित्योदिता स्वयंज्योतिकत्सुकामृतजीविनी॥ वज्रदंश वज्रजिह्वा वैदेही वज्रविग्रहा । मङ्गल्यां मङ्गला माला मलिना मलहारिगी।। गान्धर्वी गारुड़ी चान्द्री कम्बलाश्वतरित्रया। सौदामनी जनानन्दा भ्रुकुटीकुटिलानना ॥ कर्णिकारकरा कक्षा कंत्रप्राणापहारिणो । युगंधरा युगावर्ता त्रिसंध्या हर्षं वर्धिनी ॥ प्रत्यक्षदेवता दिव्या दिव्यगन्धा दिवापरा । शकासनगता शाक्री साध्वी नारी शवासना ॥ इष्टा विशिष्टा शिष्टेष्टा शिष्टाशिष्टप्रपूजिता। शतरूपा शतावार्ता विनीता सुरिभः सुरा ॥ मुरेन्द्रमाता सुद्युम्ना सुर्युम्णा सूर्यसंस्थिता । समीचा सत्प्रतिष्ठा च निवृत्तिर्ज्ञानपारगा ॥ थर्भशास्त्रार्थंकुशला धर्मंज्ञा धर्मवाहना। धर्माधर्मविनिर्मात्री धार्मिकाणां शिवप्रदा॥ धर्मशक्तिधंममयी विधर्मा विश्वधमिगी। धर्मान्तरा धर्ममध्या धर्मपूर्वा धर्नाप्रया॥ धर्मोपदेशा धर्मात्मा धर्मलभ्या धराधरा। कपाली शाकलामूर्तिः कलाकलितविग्रहा ॥ सर्वशक्तिविनिमुंक्ता सर्वशक्त्याश्रयाश्रया। सर्वी सर्वेश्वरी सूक्ष्मा सुसूक्ष्मा ज्ञानरूपिग्री।। प्रधानपुरुषेशानी महापुरुषसाक्षिणी। सदाशिवा वियन्तर्तिर्देवमूर्तिमूर्तिका।। एव नाम्नां सहस्रोग तुष्टाव रघुनन्दनः कृताजिलपुटो भृत्वा सीतां हृष्टतन्रहाम् ॥

भारद्वाज महाभाग यश्चेतत् स्तोन्नमृद्धतम् । पहेता पाठपेद्वापि स मानि परमं पृत्त ॥ श्रक्षज्ञियविड्योनिन्न ह्या प्राप्नोति शाश्चतम् । शृद्धः सन्नातिमाण्नौति धनधान्यविमृतयः ॥ भवन्ति स्तोन्नमाहारम्यादेतत्स्वस्त्ययमं महत् । मारीभणे राजभणे तथा न्यौराण्निके वर्षः ॥ स्याधीनां प्रभवे घोरे शन्नुत्थाने च संकटे । शनावृष्टिभणे विम्न सर्वधान्तिकरं परम् ॥ यद्यदिष्टतमं यस्य तत्सर्वं स्तोन्नतो भवेत् । यन्तितत्पर्व्यं सम्यवसीतानामसद्द्यसम् ॥ रामेषा सहिता देवी तन्न तिष्ठत्यसंशयम् । महापापातिपापानि विवायं पान्ति स्वन ॥

इत्यार्षे शीमद्रामाययो वाल्मीकीमे आदिकाल्मे अद्भुतीचरकाण्डे सीतासहस्रनागस्तोत्रकथन नाग पञ्चिविद्यस्यगैः ।।



॥ ग्रथ श्रीचन्द्रिकाष्टम् ॥

यस्य श्रांशेन रमोम सा वित्र्याद्यादि शक्तयः । सम्भवन्ति सदाहं श्रीचन्द्रिकालं हुर्ती स्तुमः ॥ श्रीरामध्यान गम्यं च मुमुचुम्यो गित प्रदम् । सीता शिरोभ्रपण् श्रीचन्द्रिकाल्यं नमाम्यहम् । श्रीरामाच्चि भोगरूपं चन्द्रकोटि प्रभाधरम् । सीता शिरोभ्रपणं श्रीचन्द्रिकाल्यं नमाम्यहम् । समाप्तिका भ्रषणानां विना न्यूनंकरी त या । ललाटिका परं ध्येया तां सीतालं हुर्ति स्तुमः । सीतारामयोर्च गलोपासकानां ललाटको । तिलके श्राजमाणां तां चन्द्रिकाल्यं नमाम्यहम् । स्वरस्मि मण्डले दिव्ये दीध्यतीं तरलप्रभे । चन्द्रभान् तिरस्हत्य तां सीतालंकृति स्तुमः । यस्याश्चिह्नं भालमध्ये विधाय रामतीतयोः । भायका रिसकत्य हि यान्ति तां चन्द्रिकां स्तुमः। यस्याश्चिह् भालदेशे विधाय तिलके शुभे । भवेद्रामस्यतिवियस्तां सीतालंकृति स्तुमः।

N इति श्रीचिन्द्रकाष्ट्रसम् N



अधिगल सहस्नाम स्तोहाम्

एकदा नारदी योगी पराचुमह बाञ्छया। पर्यटन् सकलाँच्लोकान्सत्यलोकमुपागमत्। हदशै तत्र ब्रह्माण् ध्यानानन्दं ननाम सः । कृताञ्चलिपुटो भूत्वा पत्रच्छ विनयान्वितः ॥ कस्मिन्सानन्दमन्तस्थे रमसे त्वं मुहुमुहुः । कथयस्त्र पितश्चाद्य परमानन्दकारगाम् ॥३॥

ब्ह्योवाच:-

मृत्य वत्स प्रवच्यामि परमानन्दकारण्म् । वशिष्ठो मत्सुतथात्र साम्प्रतं कथितोऽप्रतः ॥४॥ श्रीतीतारामयोदिं व्यं माधुर्य्यचरितं वरम् । पहस्रनाम युगलं यदभूत्परिगायोत्सवे ॥५॥ शतानन्दविशष्टौ च शाखोच्चारेषु चक्रतुः । तेनाहं कथितश्राध विशष्ठेन महात्मना ॥६॥ श्रतः हिमतास्योऽहं वत्स परमानन्दकारणम् । पितुर्वचनमाकगर्य नारदो विनयान्वितः ॥७॥ पप्रच्छ पितरं सम्यक्छ्री सीतारामयोः शुभम् । यदि त्वं मे प्रसन्नोसि कथयस्वेति मामिदम् ॥ को विधिः क ऋषिंदें वः को मन्त्रो बीजशक्तिकः । श्रङ्गन्यासं कस्यासं पठित्वा कि फलं लभेत् ।। फलं सहस्रनाम्नां कि सीतारामयुगस्थ हि । कुत्स्नं वदस्व मामद्य प्रीतिमें यदि जायते ॥१०॥

कृपानुग्रह पूर्वक परोपकार परायण श्रीनारद योगी एक बार घूमते फिरते ब्रह्मलोक में गये। वहां ष्यानानन्द में निमग्न श्री ब्रह्मा जी को श्रीनारदजी ने हाथ जोड़ प्रणाम कर विनय पूर्वक पूछा कि प्रभो ! बाप अन्तः करण में किस आनन्द में रमण करते हुए बारम्बार विभोर हो रहे हैं ? उस परमानन्द का कारण है पिता जी ! आज हमको भी सुनाइये । 😥 🎮

श्रीब्रह्माजी ने कहा-हे बत्स ! अपने परमानन्द का कारण तुमको सुनाता हूँ सो सुनो ! अभी मेरे पुत्र विशष्ठ ने मेरे सामने श्री सीताराम जी का माधुर्यं रसभरा दिव्य चरित्र सुनाया है। जो उनके विवा-होत्सव पर श्री जनकपुर घाम में शतानन्द तथा महात्मा विशिष्ठ ने युगल सहस्रनाम शास्त्रोच्चार के प्रसङ्ग में कहा या । उसका वर्णन विशिष्ठ ने मुझको सुनाया है- उसी को स्मरण कर करके मैं आनन्द में निमग्न हो रहा हूँ। वही मेरे परमानन्द का कारण है। पिताजी का ऐसा वचन सुनकर श्रीनारदजी ने विनय पूर्वक कहा कि है पिताजी ! यदि आप भुझपर प्रसन्न हैं तो परम शुभ श्रीसीतारामजी का यह युगल सहस्रनाम में भी श्रवण कराइये । उसकी विधि क्या हैं ? ऋषि कौन हैं ? देव कौन हैं ? बीज क्या है ? क्षित भेषा है ? अङ्गत्यास करन्यास करें से करें ? उसका पाठ करने का फल क्या है ? सब पूर्ण रीति से मुझसे गिरो । (इस्टोक १ से १० तक)

ॐ ग्रस्य श्रीसीतारामसहस्रनामयुगलमाधुर्यस्तोत्रमन्त्रस्य बह्याऋषिरनुष्टुप्रान्तः।
श्रीरामचन्द्रपरमात्मा देवता । श्रीजानकीशिक्तः । श्रीजानकीरामचन्द्र प्रीत्यथं जपे विति
योगः । "प्रथमन्त्रबोजम्" । ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं जानकी रामचन्द्राय नमः । "प्रथ करन्याम"
ॐ ह्रीं श्रङ्ग् ष्टाम्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ जां श्रनामिकाभ्यां नमः । ॐ नं किनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ कीं करतल करपृष्ठीम्यां नमः । "इति करन्यासः ।" ॐ रां हृदयाय नमः । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ मां शिखायं वषद् । ॐ श्रीं कवचाय हुम् । ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषद् । ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्ली श्रस्त्रायफट् ॥ "इति ग्रङ्गन्यासः" । ग्रथ ध्यानम्—

ध्याये स्त्रणिकान्ति सरितजनयनां पूर्णचन्द्र सिमतास्यां— सितां रामस्य वामां प्रहसितवदनां सुन्दराकार देहाम्। विद्युतपुत्राम वस्तां वहुमणिखचितानस्पणान्काञ्चनानां— विश्वनतीमम्बुजाची धृतशिरशुमने मेञ्जुलं रत्नमौलिम् ॥१२॥

श्रीनारवजी का ऐसा प्रश्न मुनकर श्रीत्रह्माजी ने कहा कि हे वत्स ! सुनो श्रीसीताराम युगल सहस्रनाम" में तुमको सुनाता हूँ। जिसका पाठ करने से तथा पढ़ा न हो तो पाठ सुनने से वह तीन त्रिलेकी जीतकर प्रभु का प्यारा बन जाता है। ऐसा कह कर श्रीव्रह्माजी ऊपर लिखा हुआ सङ्करण अङ्गन्यास करन्यास आदि समझाकर घ्यान बताते हैं—

स्वर्ण के समान जिनके देह की दिव्यकान्ति हैं, कमल के समान विशाल नयन हैं, पूर्णचन्द्र के समान मन्दिस्तित हैं सता हुआ मधुर मुखारिवन्द हैं, सर्वाञ्चसुन्दर मनोहर देह हैं, विजली की भाँति चमकते हुए वस्त्र तथा मणि रत्नों से जिटत कञ्चन के विचित्र आभूषण वारण किये हैं। ऐसी शिर पररत्न की मोरी तथा पुष्प चारण किये हैं। ऐसी शिर पररत्न की नाम स्तोत्र" का पाठ करना चाहिये।

सीरध्वजात्मजा सीता जानकी यज्ञभूमिजा। रघराट रामचन्द्रश्च श्रीमह्शरथात्मजः ॥
मीथली निथिलापुत्री मिथिलेश्वरनन्दिनी । कौशल्येयश्च काकुत्स्थः कौशल्यानन्दवर्धनः ॥
घरान्मजा धराबाला धरानन्दिवर्धिती । रघुवंशो राघवेन्द्रो राघवानन्ददायकः ॥
विदेहपुत्री वैदेही विदेहानन्दवर्धिनी । विश्वामित्रानुगामी च ताड्कारिः विनाकहा ॥
मिथिलापुण्यकत्री च मिथिलानन्दपूरिशी । विश्वामित्रमखत्राता सुवाहुप्राग्रहानकः ।
मिथिलेशिकशोरी च मिथिलेश कुमारिका । काकुत्स्थवंशप्रभवः काकुत्स्थकुलदीपकः ।

धरणीगर्भसम्भता धराकन्या धरामुता । अयोध्याधिपति वीरः सरयूत्रदकीडनः ॥१६॥ विदेहवंशप्रभना विदेहकुलभूपणा विश्वायंण प्रमनी रधुवंणविश्वणाः ॥२०॥ रतात्मजा रसासुत्री असुनयनाकोङ्खेलिनी । अयोध्यापालको बन्यः सुमित्रापुत्रसंबितः ॥२१॥ गिरिजापूजनरता— सरोजवन क्रीडिनी । कोदग्रह खग्रहकर्ता च ख्र्यपर्वविनाशकः ॥२२॥ राम वामाङ्गशोभाढया रामभाय्या विलासिनी । भागव य तिहुच्छान्ता विदेहाथियपुजितः॥२३॥ अमुनितेजससम्भता मुनिराजकुमारिका । केंकियी पुत्रयशगः श्रीमांश्र लच्नगात्रज्ञः ॥२४॥ विदेहराजदुहिता कामेश्वर शिवाचिनी । मिथिलादर्शनालामी मिथिलेशादि बन्दिवः ॥२५॥ कोशल्यापुत्रपतनी च कौशल्यापुत्र शोभिता । कौशल्यागर्भसम्मतः कौशल्यास्तनपानहत् ॥२६॥ दशरथस्तुषाः दिच्या दशरथसुतवरलमा । मिथिलेश्वरजामाता श्रजनन्दननन्दनः ॥२७॥ सोमवंशसमुद्भता सर्यवंशविवाहिता । कोशलेशकुमार्थ कोशलावालानचमः ॥२८॥ लाङ्गलाप्रप्रकटिता पञ्चवर्पश्रारीरिगा । हन्यपिग्डसमुद्रमृतो मुनीग्रविहुगोर्थितः ॥ २६॥ उर्मिलासहयानस्था कौंतुकागारशोभिता । सीतावाममागी च लद्दमगानुचरित्रवः ॥३०॥ इरावती तोपतृष्ता उर्विजाकुण्डपुरायवा । सरयूजलतृष्तातमा 🔑 सरयूपुण्यक्षेत्रकृत् ॥ सरप्रस्तानर सिका किम्हिमन्दारवनके लिनी । श्रहत्यापावनश्चीव किम्बनारण्यवास्कृत् ॥ कौशल्याद्याः गुश्रुषन्ती राममातृसुलालिता । धनुर्वाण्धरश्चेत्र । सन्तानवनकेलिकृत् ॥ प्रवतीनिद्र्ती रामा रामानन्द प्रवायिनी । सीतामुखारविन्दालिः सीताप्रीतिपरायणः ॥ कौशल्यां वीजयन्तीं च कौशल्यागृहलेपिनी। कौशल्यादत्तकमलः कौशल्यादत्तभूषणः॥ कौशल्यायं नमस्कर्त्री कौशल्याग्रवलापिनी । सीतानमंत्रियश्चित्तः सीतामन्दिस्मतोन्मुखः ॥ बाडिमी कुसुमौढठी च नीलरत्नद्विजावली। राजाधिराजपुत्रश्च मृगयालोमतत्परः ॥ रामशय्यां शोधयन्ती रामताम्बूलदायिनी । सीताविलासरसिकः सीताशृङ्गार साथकः ॥ सीताकन्द्रकतादितः॥ रानशय्यां स्थितवती रामाज्ञापरिपालिनी । सीताशोलमहानन्दः शुभगादिविहारिणी । महारासकरस्तत्र गीतानन्द प्रदायकः ॥ प्रमोदारण्यक्रीडन्ती सीतादशंनलोलुपः॥ हिंडोललीलारसिका हिण्डोल गीत गायिका। सीतागान श्रत्रणदः सीतासम्पुलप्रापकः ॥ स सखी पुष्पलुनती माला कन्दुक साधिनी। सर्वेश्रङ्गारसम्पन्नः पितृसम्मृतप्रापकः ॥ सखोलज्जाकृतमुखो निजमन्दिर गामिनी । पितृलज्जालुनयनः

भ मुनिशोणितसम्भूता इति : पाठान्तरः ।

अम्भोजधुलिगौराङ्गी नीलरत्नाम्बराष्ट्रता । नीलरत्नप्रतीकाश पीताम्बर वराष्ट्रतः ॥४४॥ कोमलाङ्गी विशालाची सुन्दरी गजगामिनी । काकपच्चधरः शुभ्रः कम्बुग्रीवः स्मितानमः ॥ पश्चिनी हंसगमना रामशोभाव्धिसंस्थिता । सीतामुखाव्जमार्तगढः श्रीमान् दाशरिथःसुधीः ॥ स्वाम्यमे तिष्ठती नित्यं लाजाहोमं प्रकुर्वती । सीताप्रकृत श्रीरामो बज्ञागिनं संप्रदित्तिणः ॥ अस्मारोहयदा सीता विवाहविधिसंस्कृता । सिन्दूरसीताशिरदः विदेहकरस्वस्तिषृक् ॥ लिलताम्बरधरा सीता सर्वालङ्कारसाधिनी । सपत्नी ग्रन्थिवन्धश्च कौतुकागार मध्यगः॥ युवतीप्रसाधिता सीता हविः कान्तमुखप्रदा । रामो लज्जालुनयनो जानकीसुखदो हविः॥ रुदन्ती साश्चनयना मातृकगठं न त्यच्यति । स्वश्चवीः पादनमस्कारी मैथिलेनाभिपूजितः॥ मात्रा विसर्जिता सोता सुखकान्ता स गच्छती । श्रीरामो जानकीयुक्तः यानस्थश्रस्यवेशमगः॥ लज्जालुनयना सीता जानकीगातपश्यती । गच्छमानः स्वनगरं भार्गवं विमदं कृतम् ॥ परद्युरामपूजिता सौभाग्यवरलाभिनी । शिरोमौरधरः कान्तो निजमन्दिरद्वारगः॥ श्वसुरद्वारमा सीता राजद्वाराभिपूजिता । कान्तासहितरामस्तु कौतुकागार शोभितः॥ राजाङ्गनामध्यसंस्था गुरुभार्यासदानता । गुणाकरो रासकारी जयशीलाति केलिकृत्॥ रत्निसहानस्था च शुभगा कमलावृता । मन्दिस्मतो मनस्तनुयु वतीमगडलिस्थतः॥ रम्भास्त्ररोमा निर्जिता रम्भाद्यानृत्य भाविता । कोमलाङ्गो घनश्यामो विवाहभूषगाभ्वरः॥ जानकीरूपशीलादौ सर्वनारी प्रशंसिता । प्रियालावग्यमग्नातमा प्रियाशृङ्गारसाधकः॥ अयोध्यापुरमाण्नोति परमाह्णाद दशिनी । जानकीसहपश्यन वै हाटशोभा मनोहरा॥ योवराज्यश्रुताहर्षा स्वर्णरत्नादिदानदा । विशिष्ठाज्ञाकृतः शुद्धः यौवराज्याभिसंयमः॥ पतिदेशर अहिता वनशासमुपगञ्जती । शृङ्गवेरपुरे प्राप्तः पितुराज्ञापुरस्कृतः ॥ गङ्गाविनय कर्त्री च गङ्गापारीत्तरानुगा । निपादिस्त्रम् परमी जटामगडलधारकः॥ रामलद्भगामध्यगा । भरद्वाजाश्रमगतस्तुप्तश्र ऋषिपूजितः॥ सुतीच्ण्वन्दिता पूज्या शरभङ्गाश्रमवासिनो । शरभङ्गसुक्तिदाता च घटयोनिप्रपूजितः॥ त्रनस्याशिचितवती महाशृङ्गारशोभिता । त्रत्रिप्जागृहीतातमा वालमीकिऋषिवन्दितः ॥ चित्रक्टिनिवसिता रामोच्छिष्टप्रभाजिनी । पर्गाशालानिवसितः कन्दमूल कृताशनः ॥ मन्दाकिनी स्नान कत्रीं मन्दाकिनिजलित्रया । जयन्तनेत्रहर्ता च स्फटिकादिशिलास्थितः ॥ श्वश्र दर्शनकत्रीं च गुरुपत्नी पदानता । भरतालिक्किता रामः गुरुपत्नी पदानतः ॥

वृत्रभाशिषं गृहित्री च श्वश्रूकोड निवासिनी । पितृश्राद्ध प्रकर्ता च इङ्गुदीफलपिण्डवः ॥ भ्रम् शृङ्गाररिचता श्वश्रासनकारिम्। विशव्हाय नमस्कारी भरतायाङ् झिपीठदः ॥ मायामृगविमोहिनी । मायामृगानुगामी च मारीचप्रागृहारकः ॥ पश्चवटीवासकर्त्री भावाहवं कृतवतीं भूभारार्तिविनाशिनी। खरदूषग्तिशाराविराधवधपण्डितः तङ्काशोकवनस्था च त्रिजटादिमुसेविता । कवन्धगुजभेत्ता जटायुमोत्त्रिवायकः ॥ च शरमासलीकृतवती च श्रीरामविरहाकुला। शबरीमोक्षदात्ता च सुकण्ठमित्रपालकः ॥ एकवेणी हाधोद्दरो राम रामविलापिनो । सीताशोकपरिश्रान्तो हनुमल्लक्ष्मण्बोधितः ॥ शिश्वायृक्षमूलस्था निराहारा सुनिर्जला। सप्ततालविभेदी च बालिप्राण्यिनाशकः।। राक्षमीतर्जिता सीता त्रिजटादिविचौधिता। ताराविज्ञानदश्चेव ताराशीकविनाशकः ॥ दण्डकारण्यवसिता पुग्यदाक्षेत्रकारिणी। ग्रङ्गवासेवितां ग्रिश्च सुग्रीवसुखसाधकः ॥ दशरथात्मजपत्नी च राचसीमध्यसंस्थिता । सुग्रीवराज्यदाता च एमादुःखविनाशकः ॥ प्रशोकारामवसिता भयशोकविवर्द्धिनी । हनुमदंशवाही च सुग्रीवाद्यक्षसंयुतः ॥ हनुमद्बन्धनातुरा । प्रवर्षणिगिरिस्थानः वर्षात्रस्तु विलोकनः ॥ वतनाशमहानन्दा लङ्कादग्धमहानन्दा रामगमनकांक्षिण्ि। सीलाशोकाभिसंभीतः सुग्रीवादि विबोधितः॥ सीरव्वजात्मजा बाला लङ्क्केश्वरपुरः स्थिता । समुद्रतीर गमनः सागरत्रासदायकः ॥ श्रमुरारण्यवासिता । समुद्रसेतुकरणः बालुकाशिवलिङ्गकृत् ॥ धात्री प्रकटमाना च एकलापरगा माया लङ्कमारी प्रहेश्वरी । रामेश्वराचनरती रामेश्वर मन्त्रजापकः ॥ वानराहबहर्षास्या दशास्यशापदायिनी । विभीषण्गरण्दः तस्मैराज्याभिसाधकः ॥ युदोद्यमश्रुतवती परमानन्दव्यापिनी । ऋक्षवानरसेनाट्यस्त्रिक्टाचलवासकृत् ।। राक्षसीत्राग्ततत्वरा । सुग्रीवसिववश्चैव विभीषग्पसहायवान् ॥ राज्ञसीत्रिधवाक्षवधा घोरसंग्रामशृण्वन्ती राक्षसीपरिचारिका। महायुद्धविचारी च द्वारे मर्कटप्ररकः ॥ विभीषासहायवान् ॥ रामदर्शनचित्तदा । सुग्रीवयुद्धप्रहितो राक्षसीमध्यवित्ता मार्वात्मजवाहनः ॥ रामाशाजीवनधृता रामचिन्ताविधमग्नता । लक्ष्मगायुद्धहर्षास्यो मेघनादमृती सुखी॥ हनुमद्भज्ञकरणी चिरंजीवनदायिनी । कुम्मकर्णाविनाशी च लङ्कामारी श्रुताहर्षा सरमादित्रहासिनी । प्रहस्तप्राग्गहरणो निकुम्भशिरमञ्जेदक ॥ इन्द्रयानस्थयुद्धकृत् ॥ निमिवंश किशोरी चा निमिवंशप्रमूवणा । प्रकम्पन शिरम्छेवी र्खाभिः राक्षकीस्नाता वस्त्राभरण भूषिता । रावणात्राणहर्ता । महाविजयप्रापकः

निमिराजकिशोरीं रामनामाङ्कसं स्थिता । सीताल दमगासहितः पुष्पकस्थस्वस्थम् ॥ च श्राग्निगर्भष्टता साध्वी कान्तकोडिनवासिनी । निन्दिग्रामागमनकुद्भरतादि अयोध्याप्रापितानन्दा गुरुपत्नीपदानता । गुरुपादनमस्कारी मातृणां राजशृङ्गाररचिता सर्वशोभावसाधिता । तपस्वीवेषनिमुक्तः पितृ विलोकनः॥ पदवन्दितः॥ पितृराज्यप्रसाधकः ॥ महाराजासनस्या रामवाम विराजिता । श्रयोध्याराज्यपालश्च प्रजानन्द प्रदायकः॥ अयोध्येश्वर पत्नी च अयोध्यानन्दवर्द्धिनी । महाराजाधिराजश्च मारुतात्मजसेवितः॥ लच्मगोश्वरपत्नी च लच्मगामजवल्लमा । कोशलेन्द्रपुरेशश्च कोशलेन्द्रपुरीपतिः॥ भरतामजवामस्था समाशोभाष्रवर्द्धिनी । इच्वाकुराज्यशास्ता च पृथिवीधमेपालकः॥ सुत्रीवपत्नी भजिता विभीषणप्रियाचिता । रविराजकुलोद्भृतः कुलवृद्धानुपालकः ॥ द्विजपत्नीनमस्कर्ती गुरुभार्याकृतार्चना । लद्दमणा प्रेमपात्रश्च लद्दमीकान्त प्रियंकरः॥ वसुंधरात्मजा चैव वसुदा वसुधासुता । रघुराजकुलेशश्च रघुवीरो वासवीकन्यका श्यामा रघुराज इ.लेश्वरी । रघुवंशी विशालाची ह्ययोध्यापुगयचेत्रकृत्॥ वसुधागर्भसम्भूता ज्यान जगतीधरपूजिता हुन। रविवंशिकशार्थ रविपुत्रकुलोद्भवः॥ क्षोग्। भुवता भुवतजा भूकत्या भवितिर्गता। कौशलेयश्च काकुत्स्थः कल्यागः कमलेक्षगः॥ उर्वोक्तन्या सुकेशी च मञ्जुद्योषादिवेष्टिता । प्रमोदारण्य रामेप्सू रम्भानृत्यपरायणः॥ प्रमोदारण्यरसिकाः प्रमोदारण्यभाविता । प्रमोदारण्यनटनः प्रमोदारण्यकेलिकृत्॥ प्रमोदारण्यत्तटनी प्रमोदारण्यकेलिनी प्रमोदारण्यप्रीतात्मा प्रमोदयनपुष्पाढ्या कि प्रमोदवनगायिनी। प्रमोदबनहर्षास्यः प्रमोदारण्यरासकृत्॥ श्रयोध्यापालिका वन्द्या ग्रयोध्यानृपप्रीतिदाः। क्रिशोरः कमनीयश्च कालाक्षः कामनाप्रदः॥ हं त्वंशेश्वरी हमी हं सिनो ह हं सगामिती । हं सवंशेश्वरी हिंसो पिंचनी पद्मनयन्। पद्मनान्धविशन्षुः । चन्द्रस्मित विकोराक्षश्रश्रस्य स्वन्युः । चः द्ववदना चः द्वहार विभूषिता । चः द्वमाला लित्रका द्वो हिर चान्दन वर्षितः ॥ चन्दनालिष्तसर्वाङ्गी चन्दनामोदमोदिनी । चन्दनागुरुगन्धाद्यश्चन्दनार्जनसुप्रियः कल्यामं वो विधतां त्रिश्चन्जननी जानकी भूमिजाता-चिच्छिवतर्वासुदेवे हिरहर्गनकरे पञ्चतत्त्वेनुचन्द्रे ॥ विभ्रन्ती पाणियुगमे सरसिजकलिका मालिकां रामकण्ठे— म का मुख्यती राजरङ्गी सिखगणसहिता दातुमम्भौहहाक्षी ॥ १२०॥

इस प्रकार श्री बहा। जी ने श्रीनारवजी से 'श्रीसीताराम युगल सहस्रनाम' जिसके आधे श्लोक में श्री जानकी जी का तथा आधे में श्रीरामजी के नामों का कीर्तन हैं ऐसे श्लोक १२ वे से श्लोक ११० पर्यन्त १०८ ब्लोकों में मङ्गलमय इस स्तोत्र का वर्णन किया । अब अन्तिम मङ्गलकामना करते हुए कहते हैं कि—

जिसकी दिव्य चेतना चासुदेव प्रभु तथा शिव ब्रह्मादि देवगणों में पञ्चतत्त्वों में ऊथा चन्द्र सूर्य में प्रकाशित हो रही हैं। जो अपने दोनों सुकोमल हाथों में कमल की किल्यों की बनी सुन्दर जयमाला लिये हुए श्रीरामजी के कण्ठ में पहनाने के लिये सखीगणों के रङ्गभूमि के विशाल रङ्गमञ्च पर जा रहीं हैं ऐसी विभुवन की माता, कमलनयनी श्रोजानकीजी आप सब के कल्याण का विधान करे।। १२० ॥

स्वर्णाम्भोजात्रवर्णा सरसिजनयना पूर्णचन्द्रामृतास्या— पश्यन्ती रामरूपं परिकररचितं चापखर्णं तमेकम् । श्रुग्तन्ती चारुगव्दं जय जय त्रिमलं देशताबाह्यणानां— वित्राग्याराधिताद्या ऋषिजनकसुता पातु मां सर्वदा सा ॥१२१॥

सुनहरे कमल के समान जिनका गौरवर्ण है, कमल के समान जिनके विशाल नयन हैं पूर्ण चन्द्रमा के समान अमृत से परिपूर्ण जिनका मुख है. जो परिकरों के द्वारा सुन्दर सिगार किया हुआ श्रीरामजी का स्वरूप तथा उनके ही हाथ से दूटे हुए धनुष का एक दुकड़ा गम्मीर दृष्टि से देख रही हैं. जो देवताओं तथा ब्राह्मणों के मुख से जय जयकार का निर्मल शब्द सुन रहीं हैं. ऐसी ब्राह्मणिओं द्वारा आराधित आधारशक्ति राजिष जनकजी की कन्या श्रीजानकीजी मेरी सर्वदा रक्षा करें ॥ १२१ ॥

यः कोदग्रहमतोलयद् गिरि सुतापाथोजपादार्चको । विकास प्रति स्तियति अपितः ।

यो व कौतुकमन्दिरे युवितिभः प्रादाद्विक्तन्मुखे—

सः सीताकरपङ्कजोऽत्रत सदा यो बाहुमुले स्थितः ॥१२२॥

जिसने श्रीशंकरजी के घनुय को खेळते हुए उठाकर तौळा है, जो श्री गिरिजा महराणी के श्री चरणों की पूजा करने वाळा है, कोहबर कुंज में (कौतुक मन्दिर में) युवतियों के साथ जिसने श्रीराम मुख मे हिवध्यात्र प्रदान किया है, तथा जो बाहुमूळ में विराजमान है श्रीसीताजी का वह कर कमळ सदैव हमारी रह्या करे भ १२२ ॥

यः सिद्धं यु निपुद्धवैः सुरगर्गाः संसैवितः पूजितोः— वक्षे शान पुरन्दरादिभिरले श्रीखग्रहसंचितः। भक्तानां भववन्धतापहरणस्तीर्थास्पदः शोभनः— सः सीतापदपङ्कजो ददत्त मे श्रेपांसि सन्तानकम् ॥१२३॥ श्रमाकं जनकात्मजा युवतिभिनं मींकृता विष्टिता— विश्राणींगुरुरङ्गनाशिषमलं संश्रगवती सुस्मिता। श्रीमन्मेथिलराजकौतुकगृहे ग्रन्थी कृताधिष्ठिता— सा भव्यं नितरां तनोतु सततं रामस्य वामान्विता ॥१२४॥

जो सिद्धि ऋषि मुनिवर्यों द्वारा तथा सर्वश्रेष्ठ देवगणो द्वारा मलीभांति सुसेवित तथा पूजित हैं। ब्रह्मा-शिव इन्द्रादिकों द्वारा जो श्रीखण्ड चन्दन से सदैव चिंचत होता है, जो भनतों के भव बन्धन तथा त्रिविध ताप का हरण करने वाला सर्व तीर्थमय सुशोभित हैं ऐसा श्री जानकी, जी का चरण कमल सदैव हमारे प्रेय कल्याण की परम्परा का विस्तार करने वाला हो ॥ १२३ ॥ जो अपनी सखी सहेली युविवर्षों के मधुर हास्य विनोद से भरी हुई चारों ओर से धिरी हुई हैं, जो अपने गुरुजनों की लनाओं के तथा ब्राह्मणिओं के आशीर्वचनों को सुनकर मन ही मन मधुर-मधुर मुसकाती हैं, श्रीमिथिलेश महाराज के कौतुक गृह (कोहवर कुड़ज में) अपने प्रियतम के उपरना (चादर) से गांठ जोड़े हुए विराजमान हैं ऐसी श्री राम के वामभाग में सुशोभित श्रीजनक राजदुलारी जी हम सबका सदैव निरन्तर भन्य सुमङ्गल करती रहें । १२४ ॥ ऐसी सत्कामना करके अब इस स्तोत्र का महारम्य सुनाते हैं

इदं ते कथितं वत्स ! श्रीसीतारामयोः शुभम् । सहस्रनामयुगलं भाविकानां मनोज्ञदम् ॥
तस्मात्तृप्तेन भा वत्स ! वैष्णवानां महद्भनम् । गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥
देथं सदोपासकान्। वैष्ट्रेरसिकान्मक्तिसंयुतान् । इदं सर्वस्वपरमं न देयं चान्यमार्गिणे ॥

सीतारामसहस्रनामयुगुलं मुयद्वैष्णावानां, धनं ने ये श्रावन्ति पठन्ति पूजानपरा रामैकमाहात्म्यकाः।

ते भक्ता कवर्यो धनाट्य सुखिनी सत्पूज्यमाना वरा-वाजीवारण सनिकाधिपतयो विस्तारकीत्यीयुताः ॥१२८॥

सीत्। रामसहस्रनामयुगलं श्रीतिथिवा है पाठकः । वर्षारमारमञ्जूष

तस्यैवं भवति ध्रुवं हृदि हरिः संशक्तियुक्तः स्थितः— कृत्वा पापनिवारगां कुलपति वैकुगठदायं भजेत ॥१२६॥

गङ्गास्नानतद्वागक्कप खननाद्दानाद्दया पिगडनात्— तीर्थानामटनात्त्रयागकरणा गोऽश्वादि सम्यंग्नतात् ।

यत्पुग्यं .लभते ह्याध्यरकृते चांद्रायणादि व्रतात्— सोताराम सहस्रनामपठनात् तत्सर्वद्रप्राप्यते ॥१३०॥

इति श्रीभुशुण्डिरामायणे ब्रह्मानारद सम्बादे बालकाण्डे 'श्रीसीताराम युगलसहस्रनाम'' स्तोवं सम्पूर्णम् ॥

श्रीब्रह्माजी कहते हैं हे बर्स ! नारद यह श्रीसीतारामजी का परमशुभ "युगल सहस्रनाम" स्तोत्र मीने तुमको सुनाया है। यह भाविक भक्तों का मन हरण करने वाला परम प्रिय हैं, हे बरस ! इस महा धन को प्राप्तकर श्रीविष्णव तृष्त (सन्तुष्ट) हो जाते हैं, यह अत्यन्त गुष्त रखना चाहिये। श्रीरामोपासक रिसक भक्तजनों को ही देना चाहिये! वयोंकि यह उनका सर्वस्व प्राणधन है. अन्यान्य मार्गी में मटकने वालों को कभी नहीं देना चाहिये। (इलोक १२५ से १२७ तक)

यह श्रीसीताराम युगलसहस्रनाम स्तोत्र" वैष्णवों का परम वन है श्रीराम चरणों में एकाग्र चित्त से प्रीति करने वाले जो भक्तजन इसका पठन-पाठन श्रवण-मनन करेंगे वे कवि-वनाढ य सुखी सज्जनों द्वारा पूज्यनीय सर्व श्रो ब्रुट बनेंगे उनको हाथी-चोडा सेना-नौकर चाकर का सुख प्राप्त होगा। इसका श्रद्धा द्वारा पूज्यनीय सर्व श्रो ब्रुट बनेंगे उनको हाथी-चोडा सेना-नौकर चाकर का सुख प्राप्त होगा। इसका श्रद्धा भित्त पूर्व गुद्ध मन से जो कोई पाठ करेंगे वे देवताओं द्वारा भी वन्दनीय बनेंगे. उनके हृदय में श्रीहरि भित्त पूर्व गुद्ध मन से जो कोई पाठ करेंगे वे देवताओं द्वारा भी वन्दनीय बनेंगे. उनके हृदय में श्रीहरि अपनी आहलादिनी पराशिक्त श्री जू के सहित निवास करेंगे। उनका सब पाप नष्ट हो जायगा तथा वे अपनी आहलादिनी पराशिक्त श्री जू के भागीदार बनेंगे। गंगा स्नान से कुं आ तालाव खनवाने से-दान देने से अन्त में परम पद वैकुण्ठ के भागीदार बनेंगे। गंगा स्नान से कुं आ तालाव खनवाने से-दान देने से गाया में श्राद्ध पिन्ड करने से सभी तीथों की यात्रा करने से. हाथी-घोड़ा-गायका दान देने से पूर्ण विधि पूर्व गाया में श्राद्ध पिन्ड करने से सभी तीथों की यात्रा करने से तथा चान्द्रायणादि व्रत करने से जो पुण्य प्राप्त होता व्रतोपवास करने से अश्रवभिवाराम युगल सहस्रनाम" स्तोत्र का पाठ करने से सहज ही प्राप्त होता है (ख्लोक है । वह पुण्य अश्रीसीताराम युगल सहस्रनाम" स्तोत्र का पाठ करने से सहज ही प्राप्त होता है (ख्लोक है । वह पुण्य अश्रीसीताराम युगल सहस्रनाम" स्तोत्र का पाठ करने से सहज ही प्राप्त होता है (ख्लोक है)

इस प्रकार यह श्रीभुशुण्डीरामायण वालकार्णंड के श्रीब्रह्मानारद संवादात्मक 'श्रीसीताराम युगलसहस्रनाम स्तोत्र' सम्पूर्ण हुत्रा ।

ीर्जाइनिव्हान्ति । होत्र हिंद्रते । हिंद्र

Therepresent the life life

为元为伊马内斯图》——【写影告》的图形

बार्डनार्नी हिर्देशाह स्थानदात्री हिन्दर्शा

॥ श्रीसीतानाम सहस्रकं स्तोहाम् ॥

श्रीविषष्ठ उवाच--

या श्रीरेतस्य सहजा सीतानित्याङ्गसङ्गिनी । भवित्री जनकस्यैव कुले सर्वाङ्ग सुन्द्री ॥ तस्याश्च नाम साहस्र कथयिष्यामि भूपते । यथा रामस्तर्थेवेयं महालचभीः सनावनी ॥ नानयोः समतोभेदः शास्त्रकोटि शतैरि । श्रस्यैव नित्यरमणी बहुनाम स्वरूपतः॥ तस्यास्तु नामसाहस्र' यथावदुपधार्य । 🌠 सहजानन्दिनी-सीता-जानकी-राधिका-सितः॥ रुक्मिग्गी कमला कान्ता कान्ति कमललोचना । किशोरी रामललना कामुकी करुगानिधिः॥ कन्दर्पवर्द्धिनी वीरा वरुणालय वासिनी । श्रशोकवन मध्यस्था महाशोक विनाशिनी॥ चम्पकाङ्गी तिङ्क्तान्ति जिह्नवी जनकात्मजा। जानकी जयदा जय्या जियनी जैत्रपालिका॥ परमा परमानन्द पूर्णिमामृत सागरी । सुधास्तिः सुधारिमः सुधादीपित विषहा॥ सुस्मिता सुस्मितमुखी तारका सुखदेचागा । रमागी चित्रकृटस्था सुन्दावन महेथा। कन्दर्पजननी चैत्र कोटिबसाग्डनायिका । शरग्या शारदा श्रीश्र शरत्कालविनोदिनी॥ हंसी चीराव्धि वसति वीसुकी स्थावराङ्गना । वराङ्गासन संस्थाना प्रियमोगविशाखा॥ रत्ममाला विश्वपा च दिन्यगोपालकन्यका । सत्यभामा रतिःप्रीता मित्रचित्तविनोदिनी ॥ सुमित्रा चैव कौशल्या कंकेयोकुलवर्धिनो । कुलोना केलिनी दुचा दचकन्या द्यावती ॥ पार्वतीशैलकुलजा वंशध्वजपटीरुचिः । रुचिरा रुचिरापाङ्गा पूर्णरूपा कलावती ॥ कोटिब्रह्मागडलदभीशा स्थानदात्री स्थितःशती । श्रमृतामोदिनी मोदा रत्नाचलविहारिणी धीरा वंशोरवविनोदिनी विजया वीजिनी विद्या विद्यादानपरायणा ॥ मन्दिस्मता मन्दगतिर्मदना मद्वातुरा । वृंहग्गी वृंहतीवर्या वरग्गिया रामरूपा रामनृत्यविशारदा । गान्धर्विका गीतरस्या रामप्रिया तालयचोजा तालभेदनसुन्दरी । सरयूतीरसन्तुष्टा यमुनात्रटसंस्थिता ॥ स्वामिनी स्वामिनिरता कौसुमवसनामृता। मालिनी तुङ्गवन्तोजा फलिनी फलमालिनी वैन्द्र्यमारम्भगा स्काहार मनोहरा । किरातीवेशमंस्थाना सञ्जामिता

विभूतिवा विभावीणा विणानाव विनोविनी। प्रियङ्गुकालिकापाङ्गा कटाक्षागिततीविता।। रामानुरागनिलया रत्नपङ्कजमालिनी । विभावा विनयस्था च मधुपति सुसेविता ॥ रावगाप्रागामोहिनी । दण्डकारण्यमध्यस्था बहुलीलाविलासिनी ॥ शत्रहनवरदात्री च शुक्लपत्तिप्रयाशुक्ला शुक्लायाङ्गस्त्ररोन्मुखी । कोकिलास्वरकण्ठी च कोकिलस्वरगायिनी॥ वञ्चनस्वरसन्तुष्टा पञ्चनवत्रप्रपूजिता । श्राहागुणमयी लक्ष्मीः पद्यहस्ता हरिप्रिया॥ हरिणी हरिणाक्षी च चकोराक्षी किशोरिका । गुण्डिंदा शरज्जयोत्ना स्मितस्निपर्तावग्रहा ॥ विरजा सिन्धुगमनी गङ्गासागर योगिनी । कविलाश्रमसंस्थाना योगिनी परमाकला ॥ खेचरी भूचरी सिद्धा वैष्णावी वैष्णाविष्रामा । ब्राह्मी माहेश्वरी तिग्मा दुर्वारवलविग्रहा ॥ शुक्लां गुकप्रिया रक्ता नवविद्वमहारिखी। हरिप्रिया ही स्वरूपा हीनभक्तविवर्द्धिनी ।। हिताहितगतिज्ञा च माधवी माधविष्रया। मनोज्ञा मदनौन्मत्ता मदमात्सर्यनाशिनी ॥ निःसवत्नी निरुपमा स्वाधीनपतिका परा। प्रेमपूर्ण सप्रण्या जनकोत्सवदायिनी ॥ वेदिमध्या वेदिजाता त्रिवेदी वेदभारती । गीर्वाणगुरुपत्नी च नक्षत्रकुलमालिनी ॥ मन्दारपुष्पस्तवका मन्दाक्षनयवर्द्धिनी । सुभगा शुभक्षपा च सुभाग्या भाग्यवर्द्धिनी ॥ सिन्दूराङ्कितमालाच मल्लिका दामभूषिता। तुङ्गस्तनी तुङ्गनाशा विशालाक्षी विशल्यका ॥ कल्याणिनी कलमहाकृपापूर्णा कृपानदी । किषावती वेद्यवती मिन्त्रणी भन्त्रनाथिका ।। केशोरवेषसुभगा रघुवशविवर्द्धिनी हिराधवेन्द्रप्रणियनी किनी राधवेन्द्रविलासिनी ॥ तरुणा तिरमदा तन्वी त्राणा तारुण्यवर्धिनी । मनस्विनी महामोदा मीनाक्षी मानिनी मनुः।। अग्राहीन्द्राणिका रौद्री वारुणी वंशवर्धिनी। बीतरागा वीतरित वीतशोका वरोरका।। वरदा वरसंसेव्या वरज्ञा वरकां क्षिणीं। फुल्लेन्दीवरदामा च वृन्दा वृन्दावतीप्रिया।। तुलसीपुष्पसंकाशाः तुलसीमील्यभूषिता । तुलसीवनसंस्थानाः तुलसीवनमन्दिराः ॥ सर्वाकारा नित्याकारा रूपलावण्यवर्द्धिनी । रूपिणी रूपिका रम्या रमणीया रमात्मिका ॥ बिदुठपतिपत्नी च वैकुण्ठप्रियवासिनी । बद्रिकाश्रमसंस्था च सर्व सौभाग्यमण्डिता ॥ रक्तोधी च प्रियारामा रागिगी रागविद्विनी । नीलांगुकपरीधाना सुबर्गकिलकाकृतिः ।। कामकेलिबिनोदा च सुरतानन्दवर्द्धिनी । सावित्री व्रतधात्री च करामलकनायिका ॥ मराला मोदिनी प्राज्ञा प्रभा प्राण्याप्रयापरा । पुमाना पुण्यक्ष्मा च पुण्यदा पूर्णिमादिमका ।। पूर्णाकारा क्रजानस्दा व्रजयासा व्रजेश्वरी । व्रजराजसुताधारा धाराषीयूषवर्षिणी ॥

राकापतिमुर्खीमग्ना मधुसूदनवल्लभा । वारिग्णी वीरपत्नी च वीरचारित्रयवर्धिनी ॥ धमिल्लमिल्लकापुष्पा माधुरीललितालया। वासन्ती बहंभूषा च बहीत्तंसा विलासिनी ॥ बहिंगी बहुदा बह्वी वाहुवल्ली मृगालिका । शुकनाशा शुद्धरूवा निवनो च सुदन्ता च वसुधा चित्तनन्दिनी । हेमसिहासन स्थाना चामरद्वयवीजिता ॥ छत्रिग्री छत्ररम्या च महासाम्राज्यसर्गदा । सम्पन्नदा भवानी च भवभीति विनाशिनी ॥ द्राविडो द्रविडस्याता म्रान्ध्री कर्णाटनागरी । महाराष्ट्री कविषयो 🐪 उदङ्देशनिवासिनी ॥ सुजङ्घा पङ्कजपदा गुप्तगुल्फ गुरुप्रिया । रक्तकाञ्ची गुण्करी सुरूपा बहुरूपिग्रौ॥ बलित्रयविभूषिता। गर्विणी गुविग्गी सीता सीतापाङ्गविमोचिनी ॥ सुमध्या तरुगश्रीश्च ताटिङ्किनी कुन्तिलनी हिरगिहीरमा लका। शैवालमञ्जरी हस्ता मञ्जुला मञ्जुलापिनी॥ मन्दहासमनोरमा। मधुरालापसन्तोषा कौवेरीदुर्गमालिका ॥ कवरींकेशविन्धासा इन्दिरा परमश्रीका सुश्रीः शैशवशोभिता । शमीवृक्षाश्रया श्रेगी शमनी शान्तिदा शमा॥ कुञ्जेश्वरी कुञ्जगेहा कुञ्जगा कुछदेवता । कलबिक कुलप्रीता पादाङिगुलि विभूषिता॥ वसुपत्नीं च वीरसूर्वीरवर्द्धिनी ।रोहिणी बलमाता च बलदा बलवर्द्धिनी ॥ स^{प्}तश्रुङ्गकृतस्थाना कृष्ण कृष्ण्यियप्रिया। गोपींजन गणीत्साहा गोप गोपालमगिडता॥ गोवर्धनयरा गोपी गोधनप्रमायाश्रया दिधिनिक्रय कर्जी च दानलीला विशारदा ॥ विजना विजनप्रीता विधिजा विधुजा विद्या । श्रद्धैताद्वैत विच्छिन्ना रामतादात्म्यरूपिणी ॥ क्रपारूपा निष्कलङ्का काञ्चनात्तनसंस्थिता । महार्हरत्नपीठस्था राज्यलद्भी रजोगुणा॥ रक्तिका रक्तपुष्पा च ताम्बुलदलचिंग्गी। विम्बोधी ब्रीडिता बीडा वनमाला विभूपणा॥ वनमाल कमध्यस्या रामदोर्द्रगडमङ्गिनी । खगिडतावनिजा क्रोधा विप्रलच्धा समुत्सुका ॥ अशोकवाटिका देशी कुन्त कान्तिविहारिणी । मैथिजी मिथिलाकारा मैथिलैक हितप्रदा॥ वाङ्मती शैलजा चित्रा महाकालवनित्रया । रेवाकल्लोलसुरता सत्यरूपा सदार्चिता॥ सम्या समावती सुअ् करङ्गाची शुमानना । मायापुरी तथाडयोध्या रङ्गधामनिवासिनी ॥ मुग्धा मुग्धगति मीदा प्रमोदा परमोन्नता । कामधेनुः कलपत्रहर्जी चिन्तामणि गृहाङ्गणा ॥ हिंगडोलिनी महाकेली सन्त्रीगण्विभूषिता। सुन्दरी परमोदारा रामसानिध्यकारिणी॥ महालच्मी प्रमोदवनवासिनी । विकुग्ठापत्यमुदिता परमोदारमुप्रिया ॥ समाद्धीङ्गी रामकैंड्सर्थनिरता जम्मजित् करवीजिता । कदम्बकामनस्था च कादम्बद्धलवासिनी ॥

क्लहंसकुलारावा राजहंसगतिप्रिया । कारगडव कुलाध्साहा बसादिसुर संस्थिता॥ भवा सरतीकेलिः पम्पाजलिनोदिनी । करिणीयुथमध्यस्था महाकेलि विधायिनी ॥ सरवा काञ्चनन्यंकुविश्वता । कावेरीजलसुस्नाता तीर्थस्नानकृताश्रया ॥ गुप्तगतिरमेयागोपगोपिता गोपगोपालजननी भङ्गीत्रयविराजिता ॥ गमीरावर्तनाभिश्च नानारसविलम्बिनी । शृङ्गाररससालम्बा कदम्बामोदमोदिनी ॥ काइम्बिनीयानमत्ता घूणिताचीरस्यलद्गतिः । सुसाध्या दुःखसाध्याच दिम्भनी दम्भवर्जिता ॥ गुणाक्षया गुणाकारा कल्याणगुणयोगिनी । सर्वमाङ्गल्यसम्पन्ना माङ्गल्या मन्त्रवल्लमा ॥ मुस्तितात्मजनिप्राणा प्राणोशी सर्वचेतना। चेतन्यरूपिणी ब्रह्मरूपिणी मोदवर्धिनी ॥ एकान्तभक्तमुलभा जयदुर्गी जयप्रदा । हरचापकृतक्रोधा भङ्गुरोच्चणदायिनी ॥ स्थिरा स्थिरमतिः स्थात्रो स्थावरा स्थावरप्रिया । स्थावरेन्द्रसुताधन्या धनिनी धनदार्चिता ॥ महालद्मीलोंकमाता लोकेशी लोकनायिका | प्रपञ्चातीतगुणिनी प्रपञ्चातीतिवप्रहा ।। च ज्ञानमक्तिविवद्धिनी ॥ नित्यामिकस्यरूपिणी । ज्ञानमिकस्यरूपा च राममायुज्यसाधना । ब्रह्माकाश त्रह्ममयी ब्रह्मविष्णुस्वरूपिणी ॥ परत्रक्षस्त्ररूपा महाधिम्मलशोभा च कवरी केशपाशिनी विन्मयानन्दरूपा च चिन्मयानन्दिवग्रहा ॥ ब्रह्ममायुज्यमाध्या शवरीपस्त्रिगरिगा । कनकाचलसंस्थाना गङ्गात्रिपथगामिनी ॥ त्रिपुटा त्रिष्टता विद्या प्रगावान्तररूपिगा । गायत्री मुनिविद्या च सन्ध्यापातकनाशिनो ॥ केंग्रतंकुलसम्पत्तिः सर्वदोष प्रशमनी सर्वकल्यागादायिनी । रामरामा मनोरम्या स्वयंतदम्या स्व साचिगा।। अनन्तकोटिनामा च अनन्तकोटिरुपेणी । भू लीला रुक्मिणी राधा रामकेलिविबोधिनी ॥ बीरा बन्धा पौर्णमासी विशाला लिलताल ला। लावग्यवलयाकारा लद्मीलीकानुबन्धिनी ॥ सृष्टिः स्थितिः लयाकाराः तूर्यातूर्याप्तिगावधिः । दुर्वासावरलभ्या च विचित्रवलवर्द्धिनी ॥ इतिश्रीजानकीदेव्याः नामसाहस्रकं स्तवम् । नामकर्मप्रसङ्गेन मयातुम्यं प्रकाशितम् ॥ गोपनीयं गोपनीयं त्रैलोक्येप्यतिदुर्लभम् । सीतायाः श्रीमहालच्म्याः सद्यः सन्तोपदायकम् ॥ यः पठेत प्रयतो नित्यं स सान्ताद् वैष्णावोत्तम । नित्यं गुरुमुखाच्लब्ध्वा पठनीयं प्रयत्नतः ॥
सर्वेगान्यः सर्वसम्पत्करं पुग्यं वैद्यावानां सुखप्रदम् । कीर्तिदं कान्तिदं चैव धनदं सौभगप्रदम् ॥ प्रमोदवनविहारिग्याः सीतायाः सुख्यर्धनम् । रामप्रियायाः ज्ञानक्या नामसाहस्रकं परम् ॥ इति श्रीमदादिरामायगो ब्रह्मभुशुगिड सम्त्रादे श्रीसीतानामसाहस्रकं नाम चतुर्दशोऽध्यायः।

॥ श्रीसीता अष्टोत्तर शतनाम॥

N श्रीराम उवाच N एतद्रः कथितं सर्वं मामपुरुक्तन् यदङ्गना । यच्छुतंतच्च मत्त्राप्तये उपायान्तर मुख्यो अष्टोत्तर शतंनाम्नां मितिवयायाः प्रकीर्तयेत् । सन्तुष्टा तेन सहजामामेव भावयेत् प्रिया सहजा जानकी सीता मोदिनी सधिका रमा । श्रानन्दिनी परार्जीला ललनालास्यकारिणी सीरध्वजसुता साध्वी गांधवीं प्रागन्धिनी । गोंपराजसुता गोंपी गोंपितानन्दनात्मना सुखोत्साहिनी सौम्या रत्नाचलविलासिनी । प्रमोदवनमध्यस्था-कुञ्जस्था कुञ्जगेहिनी राघवेन्द्रिया रामा लोलुपारस रंगिगी । रत्नाचलदरीस्नाना भाविनी भावभृषिता रामित्रया रामरता रामकाम्या कृपावती । किशीरी कुंडकीक्रींडा रास केलिरति स्निग्धा मंदारवनवातिनी । श्रशोकवनगा वरमी हरला सकविधायिनी ॥ गोपवंशध्यजाटी रघुवंशविलासिनी । विनोदिनी वीरबंधूर्याबदुका अचकीडा हतजया जयदा जयविद्वनी । उच्चेस्वररता वीगा दिच्यगान मनोहरा देशीजनकृतस्तीत्रा-स्तुता-सामगसेविता । सावित्री सेवधिः सेव्या मक्तिः प्रेमस्यस्पिणी। प्रेमदा प्रेमपूर्णाची लागस्यवनगाटिका । साकेतपुरलच्मीश्र महामग्रहपमध्यमा खंडिता विप्रक्रिया च स्वाधीनपतिकाप्रिया । कलहान्तरिता चैव तथा वासकसन्तिका अभिवारिगी प्रोपितोत्का राघनी चाष्ट नायिका । सुदतीः सु सुखी सुभ्रूः सुनाया सुक्रपोलिनी द्ती द्तीजनप्रीता रक्ताम्बराधराणिनी । लीलाची लास्यलिता नवयीवनशालिनी सुधावर्ष सुधाकार सुधाकरसुकी सुधा । गिर्विणी दुर्जिया दुर्गी सपतनीगर्वहा सिल कोमलालापिनी काम्याकुमारी रामवल्लभा । इत्येतत्कथितं सीतानामनाम् छोत्तरं शतम सायं प्रातः की त्ती हो। तस्में प्रसीदति । स्वंतोकं दर्शयित्वा सा प्रद्धानम सिन्निधि यधनकामयते चित्रो तत्तत्फलमवाष्नुयात् । भावयेत्सततं देशे रत्निसहासनिर्यताम् रमणी रामणीभ्यांतु सिखभ्यां परिपार्श्वयोः । दिच्यचामरयुग्मेन वीज्यमानां मनिस्ति अशोकततिकादिच्य मग्रहपान्तर चारिगीम् । सुवर्गासंशीमिशीर्पा रक्ताम्बरवराहृतीर कवित्रीलीनकुजानतह ६टं सद्भात के ६या | इवच्छेशवता हुछ केलिभिः परिशालिताम्

सहजानन्दिनीं दिव्यां राघवेन्द्र प्रियां च ताम्। भिवतमान् ॥ विविधंमीवनिबहैभीवितात्माति

 แ इति श्रीमदादि रामाय ऐ ब्रह्म भुशुण्डि सम्बादे श्रीरामप्रोक्त श्रीसीताष्ट्रोत्तरक्षतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् N श्रीं श्रीं N

॥ श्रीसीता अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

श्रीरामजी ने कहा:-

TWEEF

है अङ्गनाओं ! आपने मुझसे जो कुछ पूछा उसका उत्तर हमने जो कुछ दिया वह तो आपने सुना अब एक अन्य सर्वेश्रेष्ठ उपाय कहता हूँ उसको भी सुनिये N १ N हमारी प्राण प्रिया जू के अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र का जो कीर्तन करता है, उसपर वे सहज ही प्रसन्न हो जाती है, हमारी प्राण प्रिया जू उसको हमारी कृपा का पात्र मान लेती हैं ॥ २ ॥ सहजा-जानकी-सीता-मोदिनी-राधिका-रमा-आनिन्दिनी परालीला--ललना--हास्य विलास करने वाली–सीरध्वज कन्या–साध्वी–गांधर्वी--पद्म गन्धिनी–गोपराज सुता− गोपी-गोपिता-नन्दनात्मजा--मुखोत्साहिनी-सौम्या-रत्नाचल विलासिनी-प्रमोदवन मध्य में विराजमान क्रुञ्ज विहारिणी-कुञ्ज को घर बनाने वाली N ३-४-५ N राघवेन्द्र प्रिया-रामा-प्रेमलोलुपा-रसर**ङ्ग बर**साने वाली रत्नाचल की निर्झरिणी में स्नान करने वाली भाविनी, भावभूषिता ॥६॥ रामप्रिया, राम में ही रित करने वाली-राम जिनकी कामना करते हैं-कृपावती--किशोरी-कृण्डकी-क्रीड़ा-चित्रक्ट को अपना घर बनाने वाली N ७ N रासकेलिकी रित में आसक्ता-मन्दार वन निवासिनी अशोक वन में विराजमान-वल्लरी-हृदय के उल्लास को बढ़ाने वाली N ८ N गोप व श की ध्वजा को लहराने वाली-रघुवंश की विलासिनी विनोदनी-रघुवीर वधु-वावदूका-वराङ्गना ॥ ९ ॥ पाशा खेलने वाली-जय देने वाली-जय को बढ़ाने वाली ऊंचे पञ्चम स्वर में प्रसन्नता पूर्वक वीणा बजाने वाली-दिव्य मनोहर गान करने वाली ॥१०॥ देवीजन जिनकी स्तुति करती हैं –स्तुति करने योग्य–सामगान करने वालों द्वारा सुसेवित सावित्री-सवकी सीमा सेवनीया– भिनत प्रेम स्वरूपिणी N ११ N भिनत स्वरूपा प्रेम स्वरूपा-प्रेम देने वाली-प्रेमानन्द में जिनकी आँखे घूम रही हैं –लावण्य वन की सुन्दर वाटिका–साकेतपुर की दिव्य लक्ष्मी–महा मण्डप के मध्य विराजमान ॥ १२ ॥ खण्डिता−विप्रलब्धा−स्वाधीन भतृ का−प्रिया⊶कलहान्तरिता−वासक वसन्तिका ॥ ११ ॥ अभिसारिणी प्रोषित पतिका--राधवी--अष्ट नायिका सुदन्ती सुमुखी--सुभ्रू--सुनासा--सुकपोलिनी N १४ N स्वयं दूतिका-दूती-जन प्रिया-रक्ताम्वर घारिणी-आलियों की स्वामिनी N १५ N लोलाची-ललित हावभाव करने दाली-नव यौतन शालिनी-सुधाकर (चन्द्र) मुखी-सुधा रूपिणी-गर्विणी-दुर्जया-दुर्गी-सपत्नियों के गर्व को हरण करने वाली आनन्द की सरिता ॥ १६ ॥ कोमल वाणी सहज सन्तुष्टा कृपार्णवा ।

यह श्रीजानकी जी के अष्टोत्तर शतनाम का स्तोत्र मैंने तुमसे कहा है, सायंकाल तथा प्रातःकाल जो इसका कीर्तन करता है उस पर श्रीसीताजी अत्यन्त प्रसन्न होनी हैं ॥ १७। १८ ॥ उसको अपने दिव्य छोक का दर्शन कराकर मेरी समीपता प्रदान करती हैं। वह जो जो मन में चाहता है वह सब परिपूर्ण होता है। रहनसिंहासन पर विराजी श्रीदेवी की सतत काल भावना करनी वाहिये ॥ १९ ॥

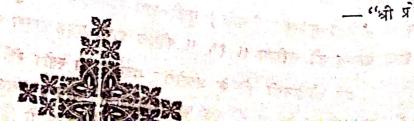
रमणी तथा रामणी दोनों सिखयां दोनों ओर दिव्य दो चैवर लेकर मनस्विनी सीताजी की सेवा करती हैं ॥ २० ॥ अशोक लितका के दिव्य मण्डय में विहार करने वाली सुवर्ण के तारों से निर्मित दिव्य वस्त्र पहने हुए सुवर्ण रत्न जटित चिन्द्रका शिर पर धारण किये, कभी कभी एक कुञ्ज से दूसरे कुञ्ज में छिपती हुई हमारे द्वारा देखी गयी. मधुर बाल स्वभाव चाली हृदय हारिणी केलि कीड़ा करने वाली श्री राघवेन्द्र प्रिया सहजा निव्दिनी दिव्या उनको विविध भावनाओं से भिनतमान जन भावना करता रहे ॥२२ HIPPE THIS IN THE R 55-54 H

ध्यह स्रादि रामायण कथित ब्रह्म भुशुण्डि सम्बाद रूप श्री राम जी द्वारा विश्व श्रीसीता ग्रह्होत्तर शतनाम स्तोत्र सम्पूर्ण हुया।" श्रीं-श्रीं ॥



॥ श्रीसीता नाम रटना ॥

भीता सीता तूं रटले बड़भागी। सीता सीता तूं रटले अनुरागी। सीता मैया लगैहैं बेड़ा पार । तूं भजले बड़भागी ॥ सीता० ॥ सीता सीता रटे दुख जिर जैहैं। सीता सीता रटे सब पैहैं। सीता सीता तूं प्रम से पुकार । सुमिर ले बड़भागी ॥ सीता०॥ सीता सीता रटे प्रभु का प्यारा । सीता सीता रटे गुण ग्रागारा । सीता मैया की महिमा अपार । तूं रटले बड़भागी ॥ सीता० ॥ सीता सीता रटे शङ्कर भोला । सीता सोता रटे तो सुफल चोला । सीता मैया है करुणागार । तूं रटले बड़भागी ॥ सीता० ॥ सीता सीता रहे तन मन भूले । सीता सीता रहे सो फले फूले । सीता "प्रमितिघी" हियहार । तूं रदले बड़भागी ॥ सीता०॥



श्रीसीता अष्टोत्तर शतनाम स्तोहांप्रारम्भ

_{भतः परं} भृगुष्यान्यत्सीतायाः स्तोत्रमुत्तमम् । यस्मिन्नष्टोत्तरशतं सीतानामानि संति हि ॥ प्रशेतरशतं सीता नाम्ना स्तोत्रमुत्तमम् । ये पठन्ति नरास्त्यत्र तेषां च सफलो भवः ॥ ते धन्या मानवा लोके ते वैद्धग्रठ ब्रजंति हि ॥३॥

श्रस्य श्रीमीतानामाष्टोत्तरशतमंत्रस्य ॥ श्रगस्ति ऋषिः ॥ श्रनुष्टुप् ल्लन्दः ॥ रमेति बीजम् ॥ मातुर्लिगीतिशक्तिः ॥ पद्माचाजेति कीलकम् ॥ अवनिजेत्यस्रम् ॥ जनकजेति-कवचत् ॥ मृलकासुरमर्दिनीति परमोमन्त्रः ॥ श्रीसीतारामचन्द्रवीत्यर्थं सकलकामनासिध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ श्रयांगुली न्यासः ॥ ॐ सीतायै श्रंगुष्टाभ्यांनमः ॥ ॐ रमायै तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ मातुलिग्यै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ पद्मात्तजायै अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ अव-निजाय किनिष्टिकाम्यां नमः ॥ ॐ जनकजाय करतलकरपृष्टाभ्यां नमः ॥ अथ हृद्यादिन्यासः ॥ 🍜 सीताय हृदयाय नमः ॥ 🍜 रमायै शिरसे स्वाहा ॥ ॐ मातुलिग्यै शिखाये वपट् ॥ ॐ पद्माचर्जाये नेत्रात्रयाय वपट् ॥ ॐ जनकात्मजाये अस्त्रायफट् ॥ ॐ मूलकासुरमर्दिन्ये इति न रोजनेत सहारामी । सम्बद्ध अस्तिक साम्मा अस्ति । विग्वन्धः ॥

वामांगे रघुटायकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना, या विद्राधिषयानरम्यनयना या विद्रपालानना । विद्युत्पुञ्ज विराजमान वसना भक्तार्ति संखग्रहना, श्रीमद्राघव पादपद्म युगलन्यस्तेचगा साञ्जतु ॥ श्रोसीता जानकी देवी वैदेही राघविषया। रमाऽविनसुता रामा राचसांतप्रकारिगी।। रत्नगुप्ता मातुर्लिगी मैथिली भक्ततोपदा । पद्माचजा कंजनेत्रा स्मितास्या न्पुरस्यना ॥ वैद्वगठनिलया मा श्रीमु तिदा कामपूरगी। नृपातमजा हेमवर्गा मृदुलांगी सुभाषिणी॥ इशांत्रिका दिव्यदा च लयमाता मनोहरा । हनुमद्दन्दितपदा मुग्धा केयूर धारिग्रो ॥ अशोकवन मध्यस्था रावणादिकमोहिनीं । विमान संस्थिता सुभ्रूः सुकेशी रशनान्विता ॥ रजारूपा सन्बरूपा तामसी वहिन वासिनी हिमपृगासक्तचित्ता वालमीकाश्रमवासिनी ॥ पतित्रता महामाया पीतकीशेय वासिनी । मृगनेत्रा च विम्बोष्ठी धनुर्विद्या विशारदा ॥ Mary and the present

श्रीसीता अण्टोत्तर शतनाम स्तोहांप्रारम्भ

भतःपरं भृगुष्गान्यत्मीतायाः स्तोत्रमुत्तमम् । यस्मिन्नष्टोत्तर्शतं सीतानामानि संति हि ॥ ष्रशेतरशतं सीता नाम्ना स्तोत्रमुत्तमम् । ये पठन्ति नरास्त्वत्र तेषां च सफलो भवः ॥ ते धन्या मानवा लोके ते वैकुग्ठं व्रजंति हि ॥३॥

श्रस्य श्रीसीतानामाष्टोत्तरशतमंत्रस्य ॥ श्रगस्ति ऋषिः ॥ श्रनुष्टुप् छन्दः ॥ रमेति वीजम् ॥ मातुलिगीतिशक्तिः ॥ पश्चाचाजेति कीलकम् ॥ अवनिजेत्यसम् ॥ जनकजेति-कवचम् ॥ मुलकासुरमर्दिनीति परमोमन्त्रः ॥ श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं सकलकामनासिध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ अथागुली न्यासः ॥ ॐ सीताये अंगुष्टाभ्यांनमः ॥ ॐ रमाये तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ मातुलिग्ये मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ पद्मात्तजाये अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ अव-निजाय किनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ जनकजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ हृद्यादिन्यासः ॥ ॐ सीताय हृदयाय नमः ॥ ॐ रमाय शिरसे स्वाहा ॥ ॐ मातु लिग्य शिखाय वषट् ॥ ॐ पद्माज्ञाय नेत्रात्रयाय वपट् ॥ ॐ जनकात्मजाय अस्त्रायफट् ॥ ॐ मृलकासुरमर्दिन्य इति ्रांताल स्थानिक । स्थानिक विकास विकास स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक

विग्यन्धः ॥

वामांगे रघुतायकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना, या वित्राधिषयानरम्यनयना या वित्रपालानना । विद्युत्पुञ्ज विराजमान वसना भक्तार्ति संखग्डना, श्रीमद्राघव पादपद्म युगलन्यस्तेचाण साञ्जतु ॥ श्रीसीता जानकी देवी वैदेही राघवित्रया। रमाऽविनसुता रामा राज्यसांतप्रकारिगाी।। रत्नगुप्ता मातुर्लिगी मैथिली भक्ततोषदा । पद्माचजा कंजनेत्रा स्मितास्या न्पुरस्यना ॥ वैक्रगठनिलया मा श्रीमु तिदा कामपूरगी। नृपात्मजा हेमवर्गा मृदुलांगी सुभाषिगी॥ इशांबिका दिब्यदा च लवमाता मनोहरा । हनुमद्भन्दितपदा गुग्धा केयूर धारिगा।। अशोकवन मध्यस्था रावणादिकमोहिनी । विमान संस्थिता सुभ्रूः सुकेशी रशनान्विता ॥ रजारूपा सन्बरूपा तामसी वहिन वासिनी हिममृगासक्तिचता वाल्मीकाश्रमवासिनी ॥ पतित्रता महामाया पीतकौशेय वासिनी । मृगनेत्रा च विम्बोष्ठी धनुर्विद्या विशारदा ॥

सौम्यरूपा दशरयस्तुपा चामरबीजिता । सुमेघा दुहिता दिन्यरूपा त्रैलोक्यपालिनी भनपूर्णा महालद्मी धीलज्जा च सरस्वती । शान्तिः पुष्टिः शमागौरी प्रभाज्योध्यानिवासिनी वसंत शीतला गौरीस्नान संतुष्ट मानसा । रमा नाम मद्रसंस्था हेमकुम्भपयोषा सुरार्चिता धृतिः कान्तिः स्पृतिर्मेधा विभावरो । लघुदरा वरारोहा हेमकंक्रणमगिहता द्विजपत्न्यर्पितनिजभुषा राघत्रतोषिणी । श्रीरामसेवनस्ता रत्नताटं क रामवामांगसंस्था च रामचन्द्रैक रंजिनी । सरयुजलसंक्रीडाकारिगां रामगोहिनी सुवर्णातुलिता पुगया पुगयकीर्त्तः कलावती । कलकंठा कंबुकंठा रंभीर्ह्माजगामिनी रामवल्लमा । श्रीरामपदचिद्गांका रामरामेतिमाषिणी रामर्पितमना रामवन्दिता रामांघित्तालिनी वरा । कामघेन्त्रत्नसन्तुष्टा मातुर्लिगक्त्युता ॥ रामपर्वक शयना दिव्यचन्दनसंस्थाश्रीम् लकासुरमर्दिनी । एवमधोत्तरशतं सीतानाम्नां ये पठन्तिनरा भुम्यां ते धन्याः स्वर्गगामिन । श्रष्टोत्तर शतं नाम्ना सीतायाः स्तोत्रमुत्ताम् ॥ जपनीयं प्रयत्नेन सर्वदा भक्ति पूर्वकम् । संविस्वोत्राग्यनेकानि पुग्यदानि महांवि च॥ नानेन सहणानीह तानि सर्वाणि शृसुर । स्वोत्राणामुत्तमं चेदं भक्तिमुक्तिप्रदं नृणाए॥ एवं सुर्तोत्त्रण ते त्रोक्तमष्टोत्तरशतंशुमम् । सीतानाम्नां पुग्यदं च श्रवणान्मंगलप्रदम्॥ नरैः प्रातः समुत्याय पठितन्यं प्रयत्नतः । सीतापूजन कालेऽपि सर्ववान्छित दायक्ष् ॥

N इति श्रीआनन्द रामाय**णे श्रीसींता अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र**ं सम्पूर्णम् N



॥ श्रीसीता श्रष्टोत्तर शतनाम स्तोहाम् ॥

अगस्त्य जी कहते हैं—हे सुतीक्ष्ण । इस तरह मैंने तुम्हें सीता कवच सुनाया। इस अनिता एक दूसरा सीता जी का स्तोत्र सुनाता हूं ॥ १ ॥ जिसमें एक सौ आठ सीता के नाम मिनुष्य इसका पाठ करते हैं । उनका जन्म सफल हो जाता है । वे मनुष्य घन्य हैं और वे अनि में वंकुण्ड लोक को जाते हैं ॥ ३ ॥ (अस्य श्री यहां से मूलकासुरमदिन्यं यहां तक विनिया तथा अङ्गन्यास आदि का विधान बतलाया गया है) ॥ अथघ्यानम् ॥ जो एक मुन्दि जो विजली के समूह की तरह दमकने वाले कप हो पहने हैं. जो अपने भक्तों को पीड़ा दूर करते

में कुछ कसर नहीं रखती, जिनके नेल श्री रामचन्द्र जी के चरणों में गड़े हुए हैं. वे सीता हमारी क्षा करें ॥ ४ ॥ अब यहां से शतनाम चलता है । जैसे — श्रीसीता. जानकी. देवी. वंदेही. बर्बात् विदेह जनक की पूजी. राघवप्रिया. रमा. अवनिसुता. (पृथ्वी की कन्या). रामा. राक्ष-सान्त प्रकारिणी (राक्ष सों का नाश करने वाली). रत्नगुप्ता. मातुलुर्झी. मंथिली. भक्ततोषदा (भक्तों को प्रसन्त करने वाली). पद्माक्ष नामक राजा की कन्या). कंजनेता (कमल के समान मेशों वाली). स्मितास्या. (जिसका मुस्कराता हुआ मुख हैं). नूपुरस्वना. वंकुण्डनिलया. (बंगुण्ड लोक में निवास करने वाली) मा. श्री. मुक्तिदा. कामपूरणी (अपने भक्तों की इच्छा पूरी करने वाली). नृपात्मजा. हेमवर्णा. मृदुलांगी (जिसके कोमल अङ्ग है). सुभाषिणी ॥ ५-६ ॥ कुशाम्बिका (कुश की माता). दिव्यदा (लङ्का से लौटने पर राम के कटुवाक्य सुनकर शपथ खाने वाली). लबमाता. मनोहरा. हनुमद्वन्दितपदा (हनुमान् जी ने जिसके चरणों को वन्दना की है). मुग्धा. केयूर धारिणी. अशोक वन मध्यस्था (अशोक वन में निवास करने वाली). रावाणादिक मोहिनी. विमानसंस्थिता. सुभ्रू. सुकेशी. रशनान्विता. रजोरूपा. सत्त्वरूपा तामसी. विह्नवासिनी (अग्नि में निवास करनेवाली). हेममृगासक चिता (सुवर्ग मृग में जिसका मन आसक्त हो गया था). वाल्मीकाश्रम वासिनी (वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में निवास करने वाली) ॥ ७-= ॥ पतित्रता. महामाया. पीतकौशेयवासिनी (पीताम्बर घारण करने वाली). मृगनेत्रा. बिम्बे की. धनुविद्या विशारदा (धनुविद्या में निपुण). सौ प्यरूपा. दशरथस्नुषा. चामर वीजिता. सुमेघा दुहिता. दिव्यरूपा. तंलोक्यपालिनी. अन्नपूर्णा. महालक्ष्मी. घी. लज्जा. सरस्वती. शान्ति. पिट. शमा. गौरी. प्रभा. अयोध्या निवासिनी. वसन्त शीतला. गौरी. स्नान सन्तुष्ट-मानसा (वसन्त ऋतु में शीतला गौरी व्रत के अवसर पर स्नान करने से सन्तुष्ट होने वाली) रमानाम भद्र संस्था. हेमकुःभपयोधरा. सुराचिता. घृति. कान्ति. स्मृति. मेघा. विभावरी. लघ्-दरा. वरारोहा. हेमकंकणमण्डिता. ॥ ९-१ ॥ द्विजपत्न्यपितभूषा (जिसने अपने सब आभूषण एक ब्राह्मणी को दे दिये घू). राघवतोषिणी. श्रीराम सेवनरता. रत्नतांटक धारिणी (रत्न के बने कर्णफूल पहनने वाली) ॥ १० ॥ रामवामङ्ग संस्था. रामचन्द्रैक रिज्जिती. सरयूजल संक्रीड्रा कारिणी (सरयू जी के जल में विहार करने वाली) राममोहिनी. सुवर्णतु लिता. पुण्या. पुण्य-कीर्ति. कलावती. कलकण्डा. कम्बुकण्डा. रम्भोरू. गजगामिनी. रामापितमना. रामवन्दिता. राम वक्षभा. श्रीराम पदचिह्नांका (जिसके हदय में श्री रामचन्द्र जी के चरण का चिह्न विद्यमान है). रामरामेतिभाषिणी (सदा राम-राम कहने वाली). रामपर्यंकशयना. रामां व्रिक्षालिनी (राम के पर घोने वाली). कामबेन्वन्नसन्तुष्टा. मातुलुङ्ग करधृता. दिव्य चन्दन संस्था. मूलकसुर घातिनो (दिव्य चन्दन पर स्थित एवं मूलकासुरका नाश करने वाली)। ये एक सौ आठ सीताजी के नाम बड़े पुण्यदायी हैं ॥ १२-१३ ॥ जो लोग इस अष्टोत्तर शतनाम का पाठ करते में. वे घन्य और स्वर्गगामी होते हैं। यह स्तोत्र सर्वोत्तम है॥ १४॥ इसलिए लोगों को चाहिए कि भक्ति पूर्वंक इसका पाठ किया करें। यद्यपि बहुत से बड़े बड़े और-और स्तोत्र पुण्यदायकहैं.

किन्तु हे भूसुर । वे सब इसके बाराबर नहीं हो सकते हैं। यह सब स्तोवों में उत्तम तथा मिल मुक्ति दायक है ॥ १४-१६ ॥ हे सुतीक्षण ! इस तरह मैंने तुमसे सीताजी का अध्येतर जननाम कहा जो पुण्यदायक और सुनने से मङ्गलदाता है ॥ १७ ॥ लोगों को चाहिए रोज सबेरे उउ कर और सीता का पूजन करते समय अवश्य इसका पाठ करें। ऐसा करने से उनकी कामनावें पूर्ण हो जायंगी ॥ १८ ॥

"यह श्रीश्रानन्द रामायणान्तर्गत श्रीसीता श्रष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र का पं० श्री रामतेज पाण्डेय कृत भाषानुवाद सम्पूर्ण हुआ।"

一:(緣:)一

-: श्रीभगवत्कृपा-वन्दना :-

दयाद्वं हृदयं सद्यः, कटाक्षाद्यस्य जायते। तामहं सततं वन्दे, श्रीमतीं भगवतकृपाम् ॥ १ ॥ भगवद्गुगारत्नेषु राजते परमोज्ज्वला। कारुण्याद्यां सदा वन्दे नित्यां श्रीभगवतकृपाम् ॥२॥

या शाश्वतमुखदायिनी श्रतिनुता, सर्वेश हुद्द्राविका-

या भगवद्गुणिसन्धुरत्नविमला; परमोज्ज्वला राजते। या देवासुरवन्दिता नरमुनिनागादिभिः प्राथिता-

म्रातंत्राण परायणां भगवतो वन्दे कुपां शाश्वतीम् ॥३॥

जिस कृपा देवी के कटाक्ष से प्रभु का हदय तुरन्त दया से द्रवीभूत हो जाता है बीज को सहचरी उस श्रीमती भगवरकृपा की मैं निरन्तर वन्दना करता हूं ॥ भगवान के अनन्तान गणरत्नों में जो सर्वोपरि विराजमान रहती है । करुणा से परिपूर्ण उस श्रीमतीभगवरकुपा की मैं नित्य ही वन्दना करता हूं ॥ जो नित्य निरन्तर दिव्यसुख प्रदायिनी है, श्रुतियाँ भी जिनकी वन्दना करती हैं, जो सर्वेश्वर के हदय को शीव्र ही द्रवीभूत कर देती है, जो भगवान के सर्वेश्वर का सर्वेश्वर के हदय को शीव्र ही द्रवीभूत कर देती है, जो भगवान के सर्वेश्वर का सर्वेश्वर निर्मलरान है, जो सर्वेश्व परम उज्जवल स्वरूप से प्रकाशित हो रही है, जो देव-असुर-नर-मुनि-नागादिक सभी प्राणियों द्वारा प्राधित है, जो रात दिन निरन्तर अप दुवी जीवों के संरक्षण में परायण है ऐसी श्रीमती भगवरकुपा का मैं भजन करता हूं ॥ १-र-भ ॥ दुवी जीवों के संरक्षण में परायण है ऐसी श्रीमती भगवरकुपा का मैं भजन करता हूं ॥ १-र-भ ॥

श्रीमीतासङ्गिनी नित्या श्रीसीतान्तर्निवासिनी। सीता स्वरूपिणी साक्षाच्छ्रोमती भगवत्रुपा॥ वतः

।। ग्रथ श्रीसीतास्तुतिः आनन्दरामायणे ।।

ततः सरगर्गोः सर्वेर्वेधाश्च राधवं ययौ । नत्वा रामं च सीतां च तुष्टाव जानकीं मुदा ॥

जनकात्मजे श्रीराघवप्रिये कनकमासुरे भक्तपालिके। दशरथात्मजप्रागावल्लमे तव पदाम्बुजाऽलिः शिरोऽस्तु मे ॥१॥

मूलकासुर प्राण्घातके रामरिचते रामसेविते । राममोहिनी स्यंदनस्थिते त्वत्पदाम्बुजार्लिः शिरोऽस्तुमे ॥२॥

राममञ्जकाधिष्ठिते रमे राम वीजिते राम लालिते । रामसंस्तुते रामरंजिते त्वत्पदाम्बुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥३॥

लोकपावनि श्रीरजेवरे भूमिकन्यके लोकपालिके । पद्मलोचने श्रीधरात्मजे त्वत्पदाम्बुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥४॥

कंजलोचने नागगामिनि स्बीय सत्सुखे रम्यरूपिणि । स्वमभूषिते मौक्ति कान्तिके त्वत्पदाबुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥५॥

जलरुहानने चित्रवासिनित्ववसि सर्वदा स्वीय सेवकान् ॥
मुनिरिपून् सदांदुःख दायिकस्त्वत्पदाम्बुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥ई॥

त्वनमुखेचगाद्रचसां पतिः प्राग्यसंचयं रामसित्पये। त्वद्दगे चगारुलिजता मृगी त्वत्पदाम्बुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥७॥

कुशलवाम्बिके जलरुहानने जलरुहेच्चाो पापदाहके । मधुरसुस्वने न्पुरस्वने त्वत्पादाम्बुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥ ॥

आगामुत्तमं तेस्मितानने तेऽधरः शुभो विम्ब सन्निभः । अध्यैत्वया मृलकासुरो मारितो रगो तारिता वयम् ॥६॥

ब्रह्मगोरितं नवकमुत्तम् भास्करोदये पठित यः पुमान् । सर्ववािक्ठितं लभित सोऽत्रवे प्राप्तुयात्सुखं रामसिन्धिम् ॥१०॥

N इति श्रीत्रहााकृत सीतास्तुतिः N

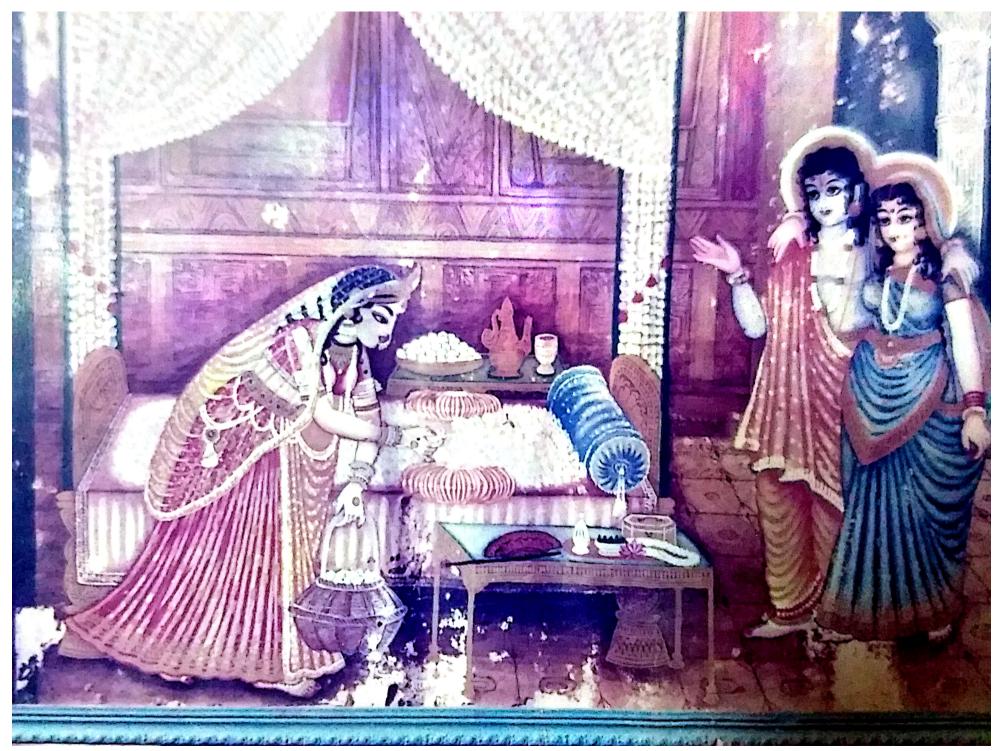
॥ श्रीसोता स्तुति ॥

一:衆(。)衆:—

थोड़ी देर बाद ब्रह्माजी समस्त देवताओं के साथ रामचन्द्र जी के पास पहुंचे की उनको तथा सीता जी को प्रणाम करके इस प्रकार स्तुति करने लगे। ब्रह्मा ने कहा-हे इत-कात्मजे ! हे सुवर्ण सहश दमकने वाली भव्यम्तिधारिणी सीते ! हे राघव प्रिये ! हे मक्तों ज्ञ पालन करने वाली माँ ! हे रामचन्द्र की प्रेयसी ! हमें आशीर्वीद दो कि हमारा मस्तक स्व तुम्हारे चरण कमल का भौंरा बना रहे ॥ २५-२६ ॥ हे मुलकासुर घातिनी ! हे रामरित्री! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सदा तुम्हारे चरण कमल का मधुकर बना रहे॥ २८॥ हे लोकपाविन ! हे श्री ! हे अजे ! हे वरे ! हे भूमिकन्यके ! हे लोकपालिके ! हे पद्महोक्ते हे धर्मात्मजे सीते ! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सर्वदा तुम्हारे चरणों का भींच का रहे ॥ ३० ॥ हे कमल सरीखे मुख वाली ! हे चित्रवसने ! तुम सदा अपने भक्तों की त्या करती हो। ऋषियों को दुःख देने वाले राक्षसों को दुःख देने वाली हे सीते! तुम ऐसा कु करो कि जिससे हमारा मस्तक सर्वदा तुम्हारे चरण कमलों भृङ्ग बना रहे॥ ३१॥ हे एन सित्प्रये ! तुम्हे देखते ही राक्षसों का राजा मुलकासूर नष्ट हो गया। तुम्हारी आंखों की ग्री देखकर मृगी लिजात हो जाती है। इस प्रकार सुन्दर स्वरूप वाली हे सीते! हमें यही बारी-र्वाद दो कि हमारा मस्तक सदा तुम्हारे चरण कमल का भ्रमर बना रहे॥ ३२॥ हे कुन्न को माता ! हे कमल के समान आँखों वाली ! हे पापों को नष्ट करने वाली ! हे मीठे ख वाली सीते ! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सदा तुम्हारे चरण कमलों का भ्रमर हा रहे ॥ ३३ ॥ हे मुस्कुराहट भरे मुख वाली सीने ! तुरहारी नासिका बहुत सुन्दर है । बिम्बा फल के समान तुःहारे लाल-लाल ओह हैं। आज तुमने संग्राम भूमि में मुलकामुर को मार इबि इससे हम लोगों का उद्धार हो गया ॥ ३४ ॥ रामदास ने कहा—जो कोई ब्रह्मा जी के द्वार स्तुति किये गये इन नौ प्रलोकों का पाउ प्रातः काल के समय करता है उसकी यहां मन कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं और अन्त समय में उसे रामचन्द्र जी के समीप स्थान मिल्ली

॥ यह इतन्द राम्यग्वितश्री सीता स्तृति का श्री राम्तेज पाग्डेय क्र





Scanned by CamScanner



जागिये सुन्दर सलोने प्रान के प्यारे पिया ! हे रिसक सिरताज मेरे नयन के तार पिया !! हैं खड़ी ललना विपुल सुिंह सीज सबकर में लिये | दर्शकों की भीड़ भारी देखिये प्यारे पिया !!

प्रातः श्री सर्वेश्वरी ज दारा जगावन



Scanned by CamScanner





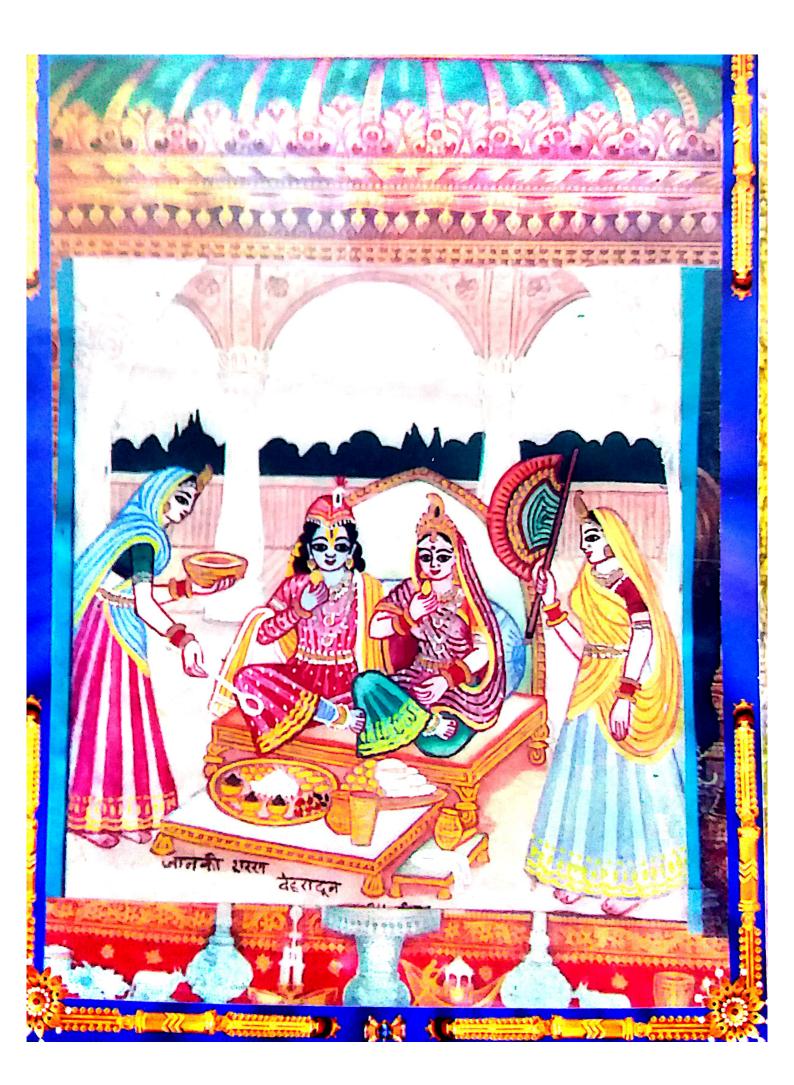






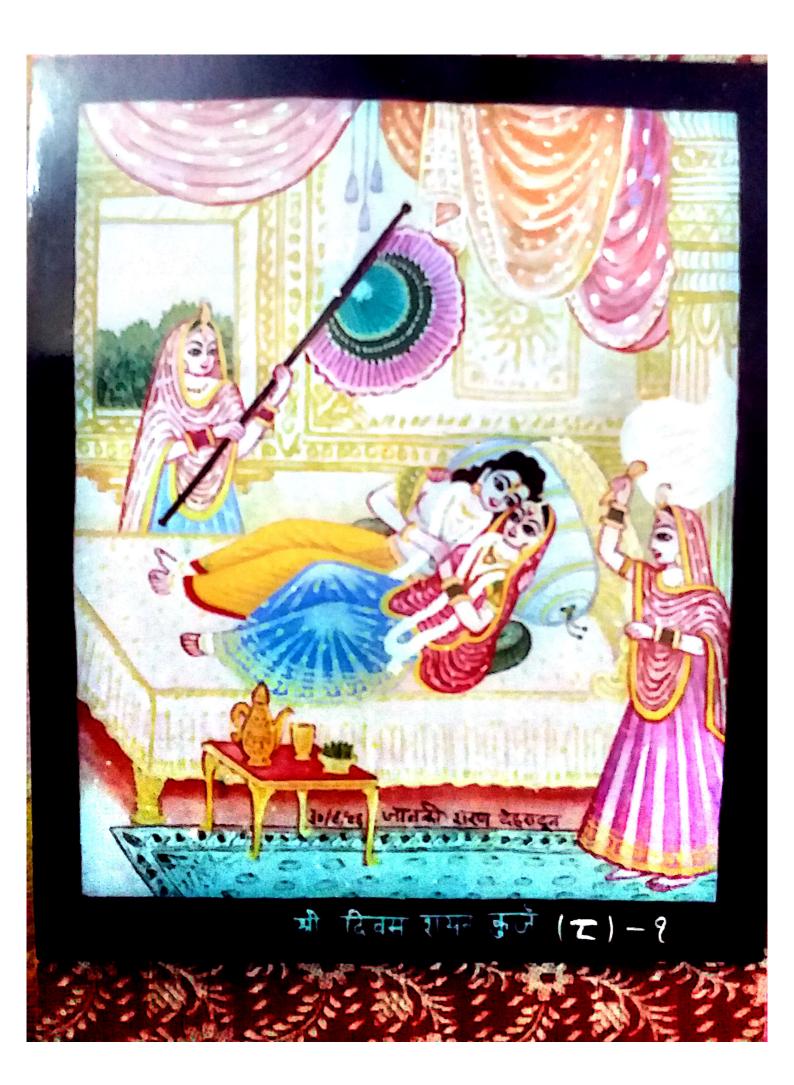








Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner

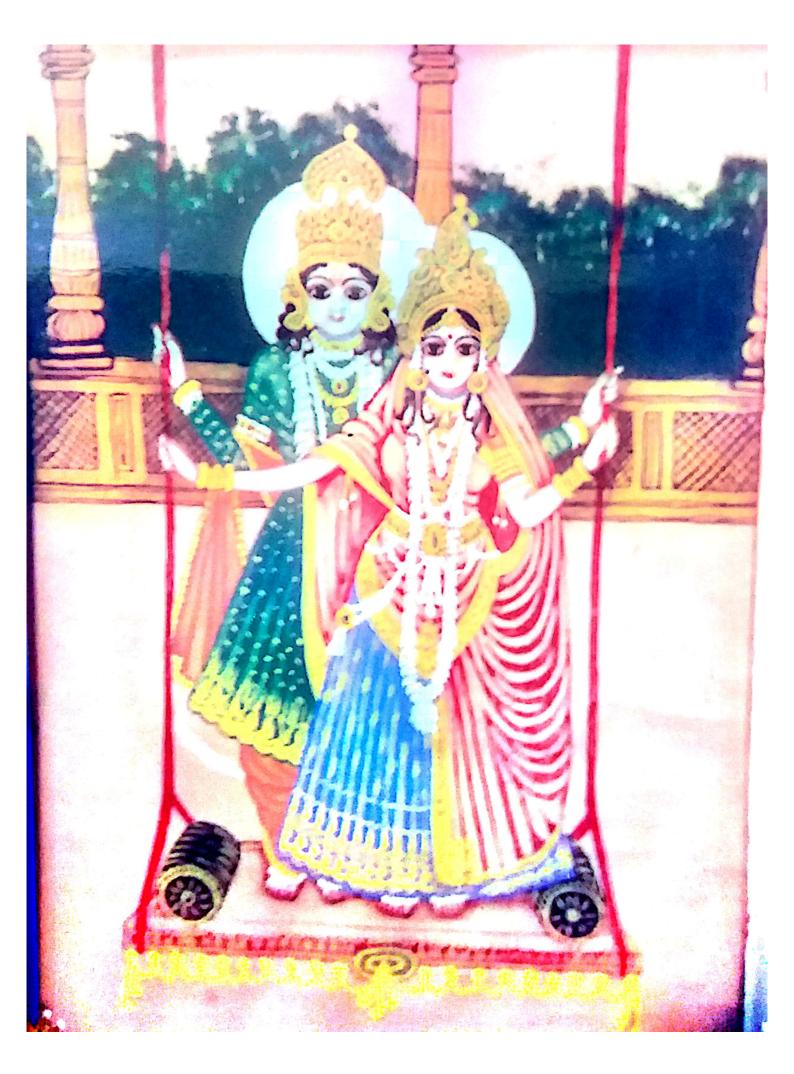




Scanned by CamScanner



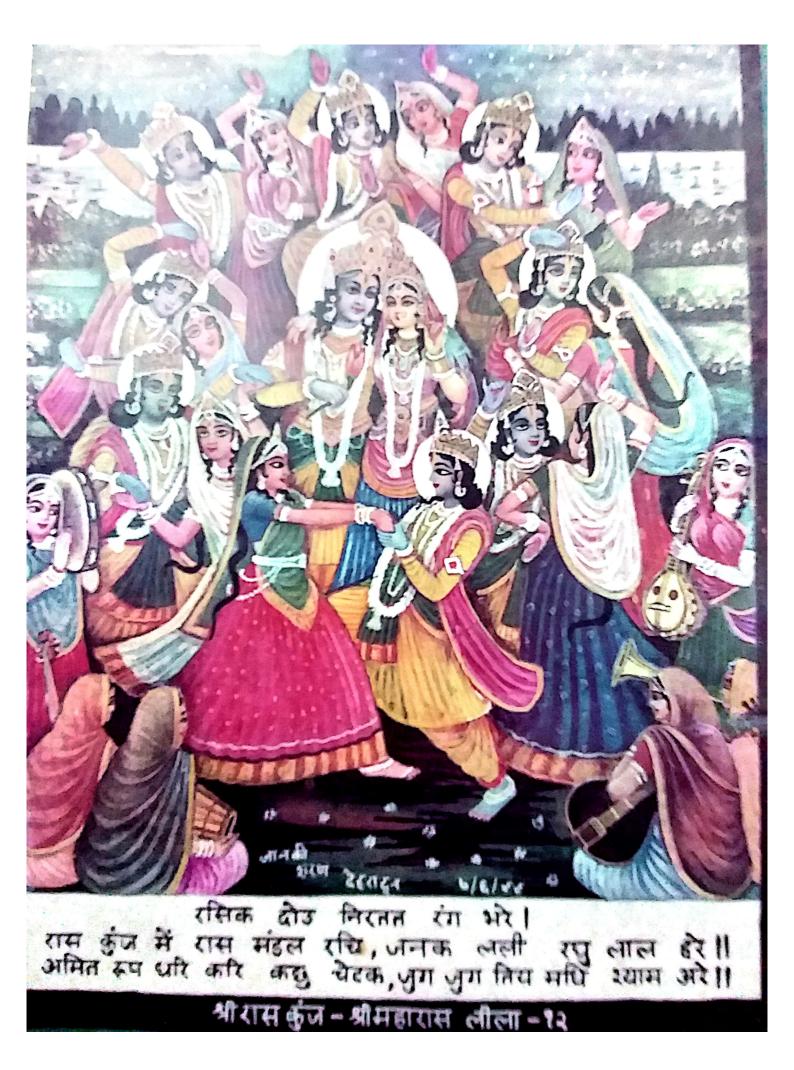
Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner











Scanned by CamScanner



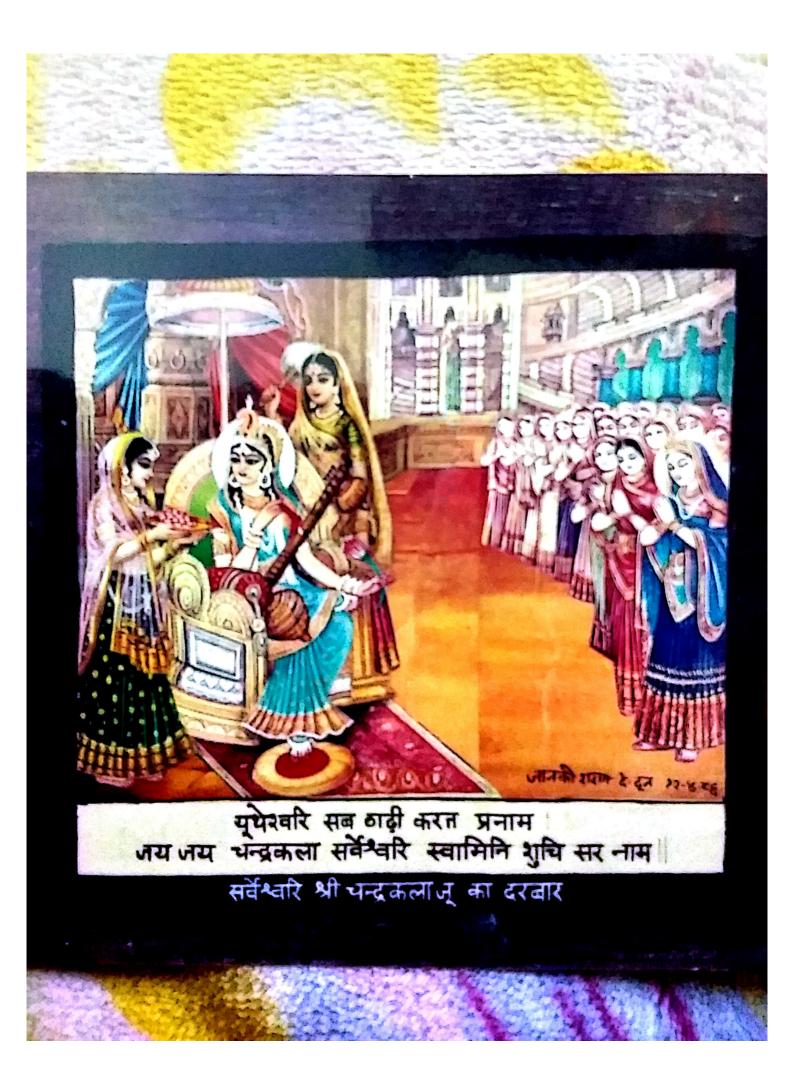
Scanned by CamScanner

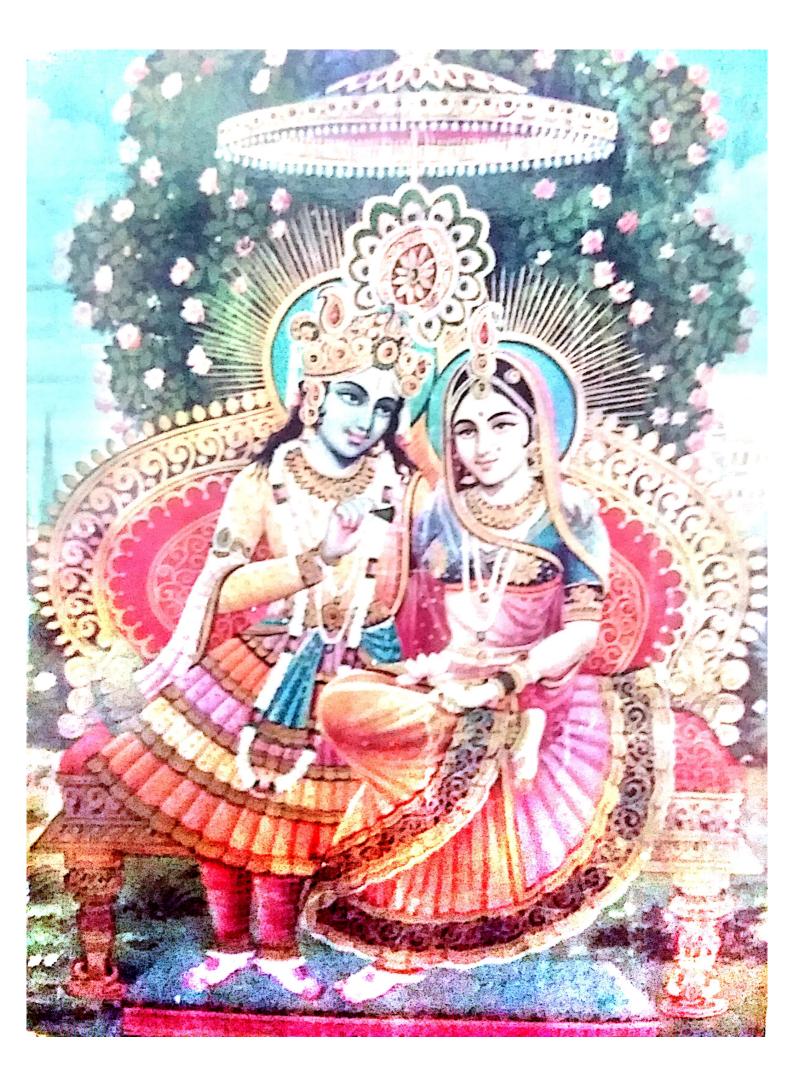


Scanned by CamScanner





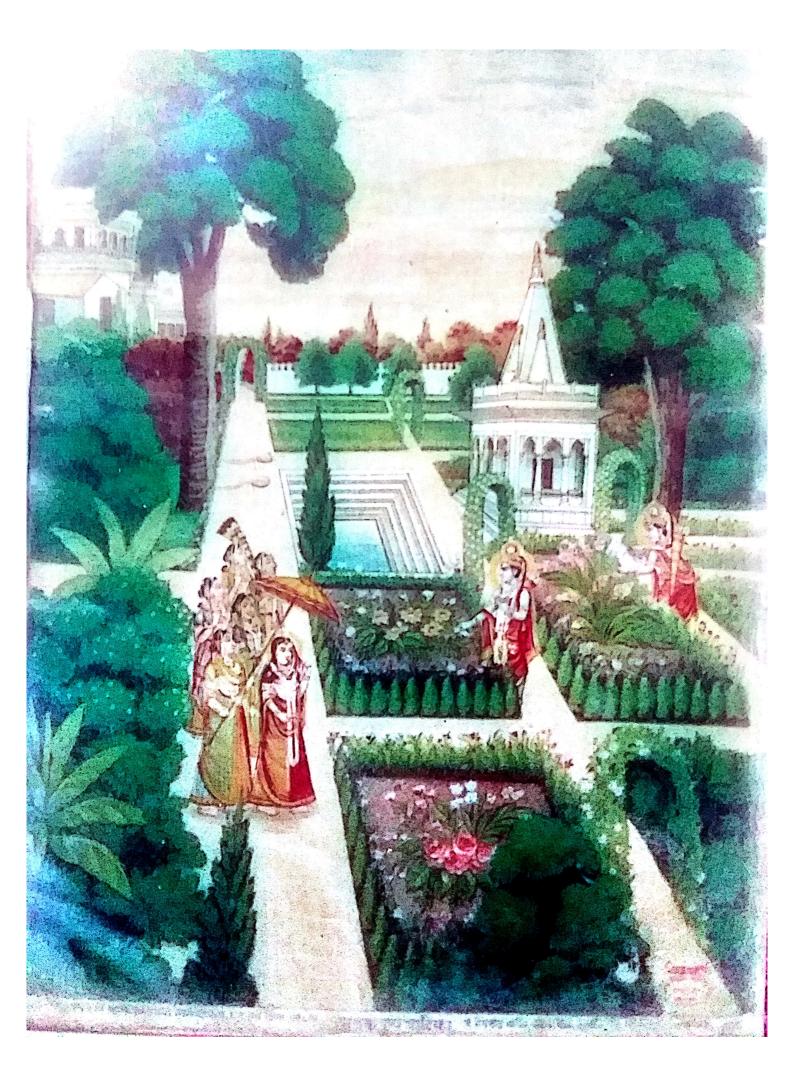




Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner



Scanned by CamScanner

